मैथिली

सुबोध व्याकरण

[छठम तथा सातम कक्षा क हेतु]

भोला लाल दास

मूल्य एक रु० मात्र]

बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक समिति द्वारा सम्पूर्ण राज्यक हेतु स्वीकृत

मैथिली

सुबोध व्याकरण

(छठम ओ सातम कक्षाक हेतु)

लेखक

श्री भोला लाल दास, बी०, ए० एल्-एल्० बी०

प्रकाशक

अभिनव ग्रन्थागार

पटना

विषय-सूची

विषय प्रवेश

मोहन, की खैतह अछि ? हम भात खैने छी ।

एवं क्रमे अपना मनक भाव व्यक्त करबाक हेतु लोक जे किछु बजैत अछि, तकरे नाम भाषा थीक। हम सब मिथिला देशमे बसै छी तेँ हमरा भाषाक नाम मैथिली अछि। एहि प्रकारेँ जतेक देश, ततेक प्रकारक भाषा अछि। पूर्व समयमे लोक संस्कृत, प्राकृत आदि भाषा बजैत छल। आइ कालिह हिन्दी, बङ्गला, मैथिली आदि बजैत अछि, एहि सँ ई स्पष्ट भेल जे देश, काल ओ पात्रक भेदेँ भाषा अनेक अछि। हमरा लोकनि केँ एखन केवल मैथिली सँ प्रयोजन अछि। एहि भाषाक द्वारा हम सब अपना मनक भाव व्यक्त करैछी, तेँ ई निश्चय भेल जे—*लोक जकरा द्वारा अपना मनक भाव दोसरा केँ बुझबैत अछि तकर नाम भाषा थीक।*

मोहन का खैला है ? हमनी भात खैले ही ।

ई दूनू वाक्य अशुद्ध अछि, मुदा आरम्भमे जे यैह दूनू वाक्य लिखल गेल अछि, शुद्ध भाषा थीक। अतः *जाहि विद्या सँ शुद्ध भाषा लिखबा-पढ़बाक वा बजबा-बुझबाक ज्ञान प्राप्त हो, तकर नाम व्याकरण थीक।*

लङ्कापति हम छी निर्भीत। फेरि गबै छी गौले गीत।

हम लंकाक राजा रावण थिकहुँ, हम फेर कहले कथा कहैत

छी। एहि दूनू भाषा मे की अन्तर अछि? एतबै जे एकमे वर्ण मात्रा आदिक नियम छैक परन्तु दोसरामे तकर अभाव छैक। यैह दू प्रकारक भाषा-पद्य ओ गद्य कहबैछ। अतः—

वर्ण मात्रा आदिक नियम सँ बान्हल भाषा कें पद्य और साधारण भाषाकें गद्य कहल जाइछ।

टि०—भाषा वाक्य सँ बनैछ, वाक्य शब्द सँ और शब्द अक्षर सँ, तें व्याकरणक तीन अंग अछि—वर्ण-विचार, शब्द-विचार ओ वाक्य-विचार। पद्यक विचार छन्द-विचार में होइछ।

———

वर्ण-विचार

हाथी=ह्+आ+थ+ई, प्रतिज्ञा=प्+र्+अ+त् इ+ज्+न्+आ, आश्चर्य=आ+श्+च्+अ+र्+य्+अ।

ऊपर 'हाथी' 'प्रतिज्ञा' ओ 'आश्चर्य' तीन शब्दक खंड कैल गेल अछि। एहि सब खंडक आब पुनः कोनो खंड नहि भै सकैछ तें ई सब अक्षर वा वर्ण कहल जाइछ। अतः—

शब्दक ओ खंड वर्ण थीक जकर पुनः विभाग नहि हो।

अ, आ, इ, ज, थ, प, ह।

ऊपर सात अक्षर लिखल गेल अछि। एहिमे प्रथम तीन अक्षरक उच्चारण अपनहि अपन होइछ मुदा शेष चारूक

उच्चारण बिना पहिलुका अक्षरक सहायता सँ नहि भै सकैछ। वर्णक यैह दू प्रकारक भेद अछि। अपनहि उच्चारण भेनिहार कैँ स्वर वर्ण और स्वरक सहायता सँ उच्चारण भेनिहारकैँ व्यञ्जन वर्ण कहल जाइछ।

स्वरक संख्या संस्कृतक अनुसार १३ अछि-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ ॠ ऌ, ए, ऐ, ओ, औ। मुदा मैथिलीमे ऋ, ॠ, तथा ऌ क प्रयोजन नहि होइत अछि। कोनो-कोनो संस्कृतक शब्दमे ऋकारक काज पड़ैछ। अस्तु, एहिमे सँ अ, इ, उ, ऋ चारि गोट स्वर एक मात्राक होइछ अर्थात् थोड़बे कालमे बाजल जाइछ तेँ एकरा सब कैँ ह्रस्व स्वर कहल जाइछ। शेष स्वरक उच्चारणमे तकर दूना समय लगैछ तेँ ओकरा सभ केँ दीर्घ स्वर कहल जाइछ। व्यञ्जनक लिखित रूपमे साधारणतः 'अ' रहितहि अछि। स्वर रहित व्यंजन हलन्त कहल जाइछ एवं ओकरा तर हलन्त चिह्न (्) लगौल जाइछ।

टि०—[मैथिली मे ह्रस्व-दीर्घक नियम संस्कृत जकाँ कठोर नहि अछि। ह्रस्वो स्वर आवश्यकता पड़ला सँ दीर्घ एवं दीर्घो स्वर ह्रस्व जकाँ बाजल जाइछ, तथा—मऽन, फूऽल, हमऽर इत्यादि। एहि सब मे लुप्ताकार क पूर्व अकारक उच्चारण दीर्घ होइछ मुदा सेरही, एकासी ढोलिया, जोलहा आदि मे प्रथमाक्षर एकार वा ओकारक उच्चारण ह्रस्व होइछ। कोन ठाम बैसब, कोनो ठाम बैसि जाउ। पहिल वाक्यक 'कोन' क ओकार दीर्घ अछि मुदा दोसर वाक्यक 'कोनो' क प्रथम ओकार ह्रस्व अछि। एहि क्रमे आनो ठाम बुझबाक चाही।]

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह।

ऊपर जे सब वर्ण वा अक्षर अछि से स्वरक सहायता सँ बाजल जाइछ तें ई सब व्यंजन थीक मुदा पाँच-पाँच अक्षरक पाँचटा एहन वर्ग अछि जकर उच्चारण कोनो विशेष स्थानक स्पर्श सँ होइछ यथा—क, ख इत्यादिक कण्ठ सँ; च, छ इत्यादिक तालु सँ; ट, ठ इत्यादिक मूर्धा सँ; त, थ इत्यादिक दाँत सँ; एवं प, फ इत्यादिक ओष्ठ सँ होइछ, तें कवर्ग कें कण्ठ्य वर्ण, चवर्ग कें तालव्य, टवर्ग कें मूर्धन्य, तवर्ग कें दन्त्य एवं पवर्ग कें ओष्ठ्य वर्ण कहल जाइछ और एहि पाँचो वर्ग कें स्पर्श वर्ण कहल जाइछ। अन्तिम चारू अक्षरक उच्चारण वायुक प्रक्षेप सँ होइछ, तें एकरा ऊष्म वर्ण कहल जाइछ। स्पर्श एवं ऊष्म वर्णक बीच मे रहलाक कारणें य, र, ल, व कें अन्तःस्थ वर्ण कहल जाइछ। यैह ३३ गोट वर्ण व्यंजन थीक। स्वर कें मिलाय अक्षरक संख्या तें ४६ भेल। एहि मे ङ, ञ, ण, न और म क उच्चारण नाक सँ होइछ तें एहि पाँचो कें सानुनासिक वर्ण कहल जाइछ।

टि० [मैथिली मे ण, श, य, ष और व क काज क्रमशः न, स, ज, ख एवं ब सँ लेल जाइछ परन्तु शुद्ध संस्कृत शब्दक व्यवहार मैथिली मे बहुत अछि, तें एहू सब कें वर्णमाला मे राखब आवश्यक।]

क्ष त्र ज्ञ

उपरक तीनू अक्षर क्ष, त्र, ज्ञ बुझना जाइछ जे दू-दू अक्षरक योगसँ बनल अछि। तेँई तीनू संयुक्त अक्षर थीक।

स्वर सानुनासिक अथवा निरनुनासिक होइछ। सानुनासिक चिह्न (ँ)चन्द्रबिन्दु एवं अनुस्वार (ं)होइछ। हकारसँ युक्त स्वर कें विसर्ग कहल जाइछ। एकरा अक्षरक आगाँ दू बिन्दू दै सूचित कैल जाइछ, यथा–दुःख, प्रातः काल आदि। अनुस्वार ओ विसर्ग क दीर्घ मात्रा होइछ।

वाक्य, प्राण, साक्ष्य

एहि सब शब्द मे हम देखै छी जे आनो आनो वर्णक संयोग अछि। यैः सब संयुक्ताक्षर थीक। कतहु-कतहु तीन-तीन चारि-चारि वर्णक संयोग भै जाइछ। वर्णमाला मे केवल क्ष, त्र, एवं ज्ञ क उल्लेख कैल जाइछ। कारण एहि तीनूक रूप स्वतंत्र होइछ, शेष संयुक्त अक्षर संयुक्त वर्णक किछु-किछु रूपरेखा रखैत लिखल जाइछ।

टि० [ई पुस्तक जाहि अक्षर मे छपल अछि से मिथिलाक्षर नहि, देवाक्षर वा देवनागरी लिपि थीक। मैथिलीक अपना लिपिक प्रचार आब बड़ थोड़ अछि। ओकर नाम मिथिलाक्षर वा तिरहुता छैक।

प्रश्न —

(१) व्याकरण ककरा कही ? एकर अंग की कीः अछि ?
(२) वर्ण कै प्रकारक अछि ? प्रत्येकक प्रभेद लिखू।
(३) संयुक्ताक्षर की थीक ? ई कतेक अछि ?
(४) मैथिली में स्वर ओ व्यंजनक प्रयोग में की विशेषता अछि ?
(५) निम्नलिखित शब्दक अक्षरशः खंड करू...
कमल, हाथ, साथी, चन्द्रोदय, सूर्यास्त।



संधि

विद्या + आलय = विद्यालय

सु + आगत = स्वागत । प्रति + एक = प्रत्येक

ई सब संस्कृतक शब्द थीक। एहि प्रकारक दू-दू तीन-तीन वा ताहू सँ अधिक शब्दक संस्कृतमे योग होइछ। पहिल शब्दक अन्त्याक्षर एवं दोसर शब्दक प्रथमाक्षरक मिललासँ उच्चारण ओ विवरण आदि मे जे किछु परिवर्त्तन उपस्थित होइछ तकरे नाम सन्धि थीक।

सन्धि तीन प्रकारक अछि (१) यदि स्वर-वर्णक सन्धि स्वर सँ होइछ तँ *स्वर-सन्धि* (२) यदि व्यंजन वर्णक सन्धि स्वर वा व्यंजन सँ होइछ तँ *व्यजन सन्धि* और (३) यदि विसर्गक सन्धि स्वर अथवा व्यंजन सँ होइछ, तँ *विसर्ग-सन्धि* कहल जाइछ। नीचाँ तकर किछु उदाहरण ओ नियम देल जाइछ।

स्वर-सन्धि

नव + अन्न = नवान्न, तथा + अपि = तथापि, विद्या + अध्ययन = विद्याध्ययन, गिरि + इन्द्र + गिरीन्द्र, देवी + इच्छा = देवीच्छा, पितृ + ऋण = पितृऋण।

यहि सँ ई नियम भेल जे ह्रस्व वा दीर्घ अ इ उ ऋ क परताँ यदि ओही जातिक ह्रस्व वा दीर्घ स्वर आबै तँ दूनू मिलिकै ओहि जातिक दीर्घ स्वर भै जाइछ।

देव+इन्द्र=देवेन्द्र, महा+इन्द्र=महेन्द्र, सूर्य+उदय=सूर्योदय, हिम+ऋतु=हिमर्तु।

एहि सँ बुझना जाइछ जे 'अ' अथवा 'आ' क परताँ यदि ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ रहै तँ दूनू मिलिकै क्रमशः ए, ओ, अर् भै जाइछ।

एक+एक=एकैक, महा+औषधि=महौषधि

एहि सँ ई नियम भेल जे 'अ' अथवा 'आ' क परताँ यदि 'ए' अथवा 'ऐ' आबै तँ ऐकार और यदि 'ओ' अथवा 'औ' आबै तँ औकार भै जाइछ।

अति+उत्तम=अत्युत्तम, मधु+आलय=मध्वालय पितृ+आदेश=पित्रादेश, मातृ+अर्चना=मात्रर्चना।

एहि सँ स्पष्ट भेल जे इ, उ, ऋ (दीर्घ वा ह्रस्व) क परताँ यदि कोनो भिन्न स्वर आबै तँ इ, उ, ऋ क स्थान मे क्रमशः य् व् र् भै जाइछ एवं ओ अगिला वर्ण मे मिलि जाइछ।

चे+अन=चयन, नै+अक=नायक, गो+ईश=गवीश, पौ+अक=पावक।

एहि सँ ई बोध होइछ जे ए ऐ, ओ, औ क पश्चात् यदि

कोनो दोसर स्वर आवै तँ ओहि चारूक स्थान मे क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव्, भै जाइछ।

पद + छेद = पदच्छेद, तरु + छाया = तरुच्छाया।

एहि सँ ई बूझि पड़ैछ जे ह्रस्व स्वरक पश्चात् यदि 'छ' आवै तँ चकार क आगम हो।



व्यंजन-सन्धि

प्राक् + उदय = प्रागुदय, दिक् + गज = दिग्गज, अच + अन्त = अजन्त, सत + जन = सज्जन, सत् + आशय = सदाशय, अप् + ज = अब्ज

एहि सब सन्धि कें देखला सँ विदित होइछ जे वर्गक प्रथमाक्षर क्, च्, ट् त्, प् क पश्चात् यदि कोनो स्वर वर्ण अथवा वर्गक तेसर, चारिम अक्षर वा य, र, ल, व रहै तँ प्रथमाक्षरक स्थान मे ओहि वर्णक तृतीयाक्षर भै जाइछ।

जगत् + नाथ = जगन्नाथ, चित् + मय - चिन्मय,

वाक् + मय = वाङ्मय, षट् + मुख = षण्मुख

एहि सँ ई सिद्ध भेल जे वर्गक प्रथमाक्षरक पश्चात् यदि कोनो सानुनासिक वर्ण आवै तँ प्रथमाक्षरक स्थानमे ओही वर्गक अन्त्याक्षर भै जाइछ।

महत् + हर्ष = महद्धर्ष, वाक + हरिः = वाग्धरिः

एहि सँ ई नियम भेल जे क् अथवा त् क परताँ यदि 'ह' आबै तँ क् त् स्थान मे क्रमशः ग् एवं द् भै जाउछ आ 'ह'क स्थान मे 'ध' भै जाइछ।

अहम्+कार=अहङ्कार, सम+गम+सङ्गम, सम्+हार =संहार, सम्+आचार=समाचार, सम्+यम=संयम,

सम्+सार=संसार।

एहि सँ ई निश्चित होइछ जे पदान्त 'म्' क पश्चात् यदि कोनो स्पर्श वर्ण आबै तँ 'म्' क स्थान मे ओही वर्गक सानुनासिक वा अन्त्याक्षर भै जाइछ, अन्तःस्थ अथवा ऊष्म वर्ण आबै तँ 'म्' क स्थान मे अनुस्वार होइछ और यदि स्वरवर्ण आबै तँ ओ अगिला स्वर मे मिलि जाइछ।

सत्+चित्=सच्चित्, उत्+ज्वल=उज्ज्वल, सत्+टीका =सट्टीका, उत्=डयन=उड्डयन, उत्+=लंघन= उल्लंघन, सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र, उत्+हार =उद्धार उत्+हरण=उद्धरण।

एहि सँ ई नियम देखि पड़ैछ जे त्कारक पश्चात् यदि च, छ रहै तँ त् कारक स्थान मे च् कार, ज् झ् रहै तँ ज् कार ट, ठ रहै तँ ट्कार, ड ढ रहै तँ ड्कार, ल रहै तँ ल् कार, तालव्य 'श' रहै तँ त् कारक स्थान मे च्कार एवं 'श' क स्थान में 'छ' और 'ह' रहै तँ त् कारक द् कार एवं 'ह' क स्थान मे 'ध' होइछ।

विसर्ग सन्धि

बहिर+खेद=बहिःखेद, अन्तर+संज्ञा=अन्तःसंज्ञा ।

रेफान्त शब्दक परताँ यदि वर्गक द्वितीय अथवा तृतीय वर्ण अथवा ऊष्म वर्ण आबै तँ रेफक स्थान मे विसर्ग भै जाइछ। उपरक उदाहरण सँ येह नियम सिद्ध भेल ।

पुनः+थुत्कार=पुनस्थुत्कार, निः+चय=निश्चय, दुः+तर+दुस्तर, निः+छल=निश्चल, धनुः+टंकार=धनुष्टंकार ।

एहि सब उदाहरण सँ बोध होइछ जे त, थ सँ पूर्व विसर्गक स्थान मे सकार, च, छ सँ पूर्व विसर्गक स्थान मे शकार एवं ट, ठ सँ पूर्व षकार होइछ ।

निः+गंध=निर्गन्ध, दुः+गंध=दुर्गन्ध, निः+रस =नीरस, दुः+राज=दूराज ।

एहि सँ ई निश्चित भेल जे 'अ' अथवा 'आ' सँ भिन्न कोनो दोसर स्वर विसर्गक पूर्व हो तथा वर्गक पहिल, दोसर ओ श, ष, स, सँ भिन्न कोनो दोसर व्यंजन परताँ आबै तँ विसर्गक रेफ होइछ मुदा रकारक परताँ रहने विसर्गक लोप होइछ एवं ओकरा पूर्वक स्वर दीर्घ भै जाइछ ।

अन्तः+जगत्=अन्तर्जगत्, पुनः+जन्म=पुनर्जन्म प्रातः+दर्शन=प्रातर्दशन स्वः+गमन=स्वर्गमन ।

एहि सब सँ ई नियम भेल जे पुनर्, अन्तर्, प्रातर्, आदि रेफान्त सम्बन्धी विसर्गक हेतु पूर्वक नियम लागू नहि होइछ।

प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः, मनः + अभिलषित = मनोऽभिलषित, तेजः + आगम = तेजआगम, अतः + एव अतएव।

एहि सँ ई सिद्ध भेल जे विसर्गक पूर्व ओ पश्चात् यदि अकार हो तखन तीनू मिलि कै ओकार एवं लुप्ताकार होइछ मुदा जौं परताँ आन स्वर आबै तखन विसर्गक लोप होइछ एवं पुनः सन्धि नहि होइछ।

प्रश्न

(१) सन्धि ककरा कहल जाइछ, ई कै प्रकारक अछि ?

(२) निम्नलिखितक सन्धि-विच्छेद करू एवं नियम लिखू—
प्रत्युत्तर, जगदीश, पावक, नायक, चिच्छक्ति, उच्छृङ्खल, वहिर्गत, निश्चित, दुर्बुद्धि, मनोरथ।

निम्नलिखितक सन्धि करू तथा नियम लिखू—

हिम + ऋतु, मातृ + ऋण, सरयू + अम्बु, गो + ईश, षट् + दर्शन, अप + ज, वाक् + मय, श्रीमत् + शंकर, मनः + ताप, निः + छल, निः + रस, अतः + एव।

(४) स्वरसन्धिक मुख्य नियम की अछि, सोदाहरण तकर उल्लेख करू।

(५) विसर्ग क स्थान में दन्त 'स' कते कते होइछ, सोदादरण तकर नियम लिखू।

शब्द-विचार

उकं, पुकन, खोंका।

हाथी, घोड़ा पोखरि, इनार।

जे किछु कान सँ सुनि पडै, सैह थीक शब्द। पहिल पाँतीमे जे सब शब्द अछि, तकर किछु अर्थ नहि अछि, मुदा दोसर पाँती मे जे शब्द अछि, तकरा सभक अर्थ अछि तें ई निश्चय भेल जे शब्द दू प्रकारक अछि—*निरर्थक* ओ *सार्थक*। व्याकरणकेँ सार्थके शब्द सँ प्रयोजन छैक। आब देखू सार्थक शब्द कै प्रकारक अछि।

मनुष्य, सीता, दूध, सभा, मोटाइ, विद्या,
कैलक, करैत, अछि, चलल, बजैछी, करब।
आइ, कालिह, एतै, ओतै वाह, चाबस।

उपरक तीनू पाँती मे कतोक शब्द राखल गेल अछि। पहिल पाँतीक शब्द सँ ई बूझि पड़ैछ जे ई सब कोनो वस्तु वा व्यक्तिक नाम थीक। एकरे संज्ञा कहल जाइछ। हँ, वस्तु नहि, वस्तु क नामे संज्ञा थीक। दोसर पाँतीक शब्द सँ कोनो क्रिया बूझि पड़ैछ अतः कोनो काज करब अथवा हैबाक नाम क्रिया थीक।

संज्ञा और क्रिया शब्दक रूप कतेक प्रकारें बदलैत अछि मुदा तेसर पाँतीक शब्द एहन बूझि पड़ैछ जे कोनहु प्रकारें दोसर रूपक नहिं भै सकैछ। एकरा सभक रूप सर्वदा एके रंग रहैछ, तें एकरा अव्यय कहल जाइछ। तस्मात् ई नियम भेल जे जतेक सार्थक शब्द अछि, तकर तीनिए टा भेद अछि —संज्ञा, क्रिया ओ अव्यय।

संज्ञा-प्रकरण

संज्ञाक व्युत्पत्ति भेद

हाथी, घोड़ा, कलम, टमटम, कटहर।

एहि शब्द सब कें यदि हम खंड करै चाही तँ नहि हैत, ओ खड निरर्थक भै जैत हाथी मे 'हा' अथवा 'थी' क अलग-अलग कोनो अर्थ नहि। एहने संज्ञाक नाम रूढ़ि थीक।

तें जाहि संज्ञा शब्दक खंडे नहि भै सकै अर्थात् जकरा खंडक कोनो अर्थ नहि हो तकर नाम रूढ़ि संज्ञा थीक।

कमलपत्र, पाठशाला, सुरपति, नाचघर

एहिमें प्रत्येक शब्दक खंड अछि और प्रत्येक खंडक अर्थ अछि, तें एहन संज्ञा कें *यौगिक संज्ञा कहल जाइछ। जकर खंड सार्थक हो और खंडार्थक योग वर्तमान रहैक।*

हनुमान, जलद, मुरलीधर, गणपति

हनु अर्थात् दाढ़ी, मान अर्थात् वाला (दाढ़ीवाला), ई त

हनुमानक खंडार्थ भेल परन्तु ई शब्द रूढ़ि भै गेल अछि एकटा देवताक अर्थ में। तहिना 'जलज' क अर्थ जल सँ उत्पन्न कोनो वस्तु अछि परन्तु इ रूढ़ि भै गेल अछि केवल कमलक फूलक अर्थ मे। तैं जाहि संज्ञाक खंडार्थ हो परन्तु से सब नहि लै एकटा कोनो अर्थ लै ल जाइत हो, तकरा योगरूढ़ि संज्ञा कहल जाइछ।

संज्ञाक अर्थ-भेद

राम, कृष्ण, गंगा, कमला, मिथिला, हिमालय

एहि सब सँ बूझि पड़ैछ जे ई कोनो एके वस्तु वा व्यक्तिक नाम थीक तें एहन नाम *व्यक्तिवाचक संज्ञा* कहबैछ।

मनुष्य, पशु, नदी, पहाड़, देश, जीव, जन्तु

एहि प्रकारक नाम सँ सम्पूर्ण जातिक बोध होइछ तें एकरा *जातिवाचक संज्ञा* कहल जाइछ।

टि० [*कविवर दिनकर यथार्थ 'दिनकर' छथि। हम रधिया नहि छी जे धमकी सुनवहु। एहि दूनू वाक्य मे 'दिनकर' ओ 'रधिया' यद्यपि एके-एके व्यक्तिक नाम थीक (दिनकर नाम व्यक्तिवाची संज्ञा सूर्य एवं रधिया कोनो असहाय अबलाक नाम थीक) तथापि एहि ठाम ई दूनू जातिवाचक संज्ञा थीक, कारण जे एतै ई तत्तत् व्यक्तिक हेतु नहि, ओकरा गुणक अर्थात् अत्युग्रता एवं असहायताक हेतु व्यवहृत भेल अछि। एकर प्रतिकूल—भाइजी हमरा मना करैत छथि, पंडित जी कथा वंचै छथि—आदि वाक्य मे भाइजी, पंडित जी यद्यपि जातिबाचक*

संज्ञा थीक तथापि एहिठाम व्यक्ति विशेषहिक हेतु व्यवहृत भेल अछि तें स्वरूपतः जातिवाचक संज्ञा होइतहुं व्यवहारतः एहि ठाम ई व्यक्ति-वाचक संज्ञा थीक। एही क्रमे केवल शब्दहिक ऊपर नहि, किछु शब्दार्थहुक ऊपर ध्यान राखि संज्ञाक जातिवाचक वा व्यक्तिवाचक भेदक निर्णय करबाक चाही।]

आगि, पानि, माटि, सोना, चानी, दूध, घी

एहि सब सँ बूझि पड़ैछ जे ई सब कोनो द्रव्य वा धातुक नाम थीक। एहि सब द्रव्य वा धातुक गिनती लोक वा पशु-पक्षी जकाँ नहि भै सकैछ, केवल तौल भै सकैछ। एहने संज्ञाक नाम *द्रव्यवाचक संज्ञा* **थीक।**

जनता, सभा, सेना, मेला, मंडली, पंघति

एहि सब नाम सँ कोनो वस्तु वा लोकक समूह बूझि पड़ैछ तें एहि प्रकारक संज्ञा कें *समूहवाचक संज्ञा* **कहल जाइछ।**

टि० *[द्रव्यवाचक ओ समूहवाचक संज्ञा वस्तुतः जातिवाचके संज्ञा थीक मुदा अंगरेजी व्याकरणक रीतिएँ आइ काल्हि एहि दूनु कें ताहि स पृथक् मानल जाइछ। एहि सभक एकटा विशेषता ई अवश्य छैक जे साधारणतया एहि सबमे बचनक कोनो तारतम्य नहि छैक जेना जातिवाचक संज्ञाकें छैक। जल, वायु, आकाश आदि वस्तुक विभाग होइतहु मनि छैक जे तकर मनुष्यादि जकाँ गणना भै सकै तथापि एहि सब वस्तुक जखन प्रभेद विवक्षित होइछ, तखन ई सब बहुवचन भै जाइछ। ताहि स्थिति में ई सब सब जातिवाचके संज्ञा कहल जाइछ। यथा—गोनी सोना सँ पन्ना सोना उत्तम*

होइछ। युद्ध-क्षेत्र मे शत्रु पक्षक चारू अक्षौहिणी सेना मारल गेल। तहिना भाववाचक संज्ञामे बुझक थीक। यथा - तर्क विद्या, अस्त्र-विद्या, गान-विद्या आदि विद्याक अनेकानेक प्रभेद अछि। एहिमे पूर्वक तीनू विद्या भाववाचक परन्तु अंतक जातिवाचक थीक।]

गोराइ, नमती, बुधियारी, मोटाई, सुन्दरता, दिन, मास

एहि नाम सँ बूझि पड़ैछ जे ई सब वस्तु आँखि, कान, नाक आदि कोनो इन्द्रिय द्वारा अनुभव करबाक वस्तु नहि थीक केवल मनक द्वारा सोचल वा बुझल जाय सकैछ, तें एहि प्रकारक संज्ञा कें भाववाचक संज्ञा कहल जाइछ।

टि० [भाववाचक संज्ञा अनेक प्रकारक अछि, यथा—दिन, मास, वर्ष आदि कालक अवधि अथवा विभागक नाम, उत्कृष्टता, निकृष्टता आदि गुणक नाम, बुद्धि, ज्ञान, महत्ता आदि निराकार वस्तुक नाम एही प्रकारें भिन्न-भिन्न गुण, कर्म ओ स्वभावक नाम आदि।]

प्रश्न

(१) सार्थक शब्दक कतेक भेद अछि, उदाहरण सहित लिखू।

(२) संज्ञा ककरा कहै छैक, ई कै प्रकारक होइछ ?

(३) योगरूढ़ि संज्ञाक पाँचटा उदाहरण दिअ तथा ओकर लक्षण लिखू।

(४) जातिबाचक संज्ञा ओ व्यक्तिवाचक संज्ञा मे की भेद अछि।

(५) की जातिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक और व्यक्तिवाचक

संज्ञा जातिवाचक भै सकैछ ? उदाहरण द्वारा बुझाउ।

(६) भाववाचक एवं द्रव्यवाचक संज्ञा कखन जातिवाचक संज्ञा भै जाइछ ?

गुणवाचक संज्ञा वा विशेषण

धनिक लोककेँ कोनो कष्ट नहि छैन्हि।

गरीब लोक बड़ कष्ट मे अछि।

एहिमे धनिक ओ गरीब शब्द 'लोक' क गुण प्रकट करैछ अतः जे शब्द कोनो वस्तुक विशेषता जनाबै से ओकर *विशेषण* कहबैछ। जकर विशेषता प्रगट होइछ, से विशेष्य कहबैछ।

टि० [विशेषणो संज्ञाहिक प्रभेद थीक, कारण जे कोनो वस्तु क गुण ओहि वस्तु सँ पृथक् नहि रहि सकैछ। एकर अतिरिक्त केवल विशेषणहुक व्यवहार संज्ञा रूपेँ होइछ-यथा, धनिक कें कथीक कष्ट हैतैन्हि कष्ट छैक गरीब कें]

छोट गाछ। पातर छड़ी। सुन्दर बालक।

एहि वाक्य मे 'छोट' 'पातर' 'सुन्दर' कोनो वस्तुक वा व्यक्तिक गुण सूचित कै रहल अछि, तें ई गुणवाचक विशेषण भेल। एहि क्रमे जे शब्द कोनो वस्तु वा व्यक्तिक गुण सूचित करैछ से गुणवाचक विशेषण कहबैछ। एहि प्रकारक विशेषणक सख्या सर्वाधिक अछि।

काल्‌ बाबू कें बहुत धान छैन्हि। थोड़ेक दही और दिअ।

एहिमे बहुत ओ थोड़ शब्द सँ वस्तुक परिमाण वा तौल बुझना जाइछ, तें एहि प्रकारक विशेषण कें परिमाणवाचक विशेषण कहल जाइछ।

टि० [जे वस्तु गनल नहि जाय, केवल तौल वा मात्राक हिसाब सँ अल्प वा अधिक बुझल जाय सैह परिमाणवाचक हैत यथा— पर्याप्त धन, अल्प अन्न किंचित्‌ दूध, अधिक जल आदि]

चारिटा हाथ लोक कोना बनौत ?

तीनू लोक मे एहन मनुष्य नहि हैत।

एहि मे तीन चारि आदि शब्द सँ कोनो वस्तुक संख्याक बोध होइछ, तें एहि सबकें *संख्यावाचक* विशेषण कहल जाइछ।

किछु लोक कहैत छथि। संसार मे अनेक लोक अछि।

ऊपर जे वाक्य देल गेल अछि, ताहिमे 'किछु' ओ 'अनेक' अनिश्चित संख्याक बोध करबैछ तेँ संख्यावाचक विशेषणक दू प्रभेद भेल—निश्चयात्मक एवं अनिश्चयात्मक संख्यावाचक। जखन एहन विशेषण एहन वस्तुक विशेषता सूचित करैछ, जकर संख्या नहि होइछ, केवल परिमाण होइछ (यथा–दूध, दही, जल आदि तखन ई सब परिमाणवाचक विशेषण भै जाइछ।

पाँच टाका मे ई वस्तु कीनल (समुच्चय बोधक)

गोपाल पाँचम वर्ग मे पढ़ैत अछि (क्रमबोधक)

गोपाल कें एहि धनक पँचमी भेटलैन्हि (अंश बोधक)

श्याम सँ गोपाल कें पाँचबर वा पचगुना भेटलैन्हि

(आवृत्तिबोधक)

उपर्युक्त उदाहरण सँ स्पष्ट होइछ जे कोनो निश्चयात्मक संख्यावाचक विशेषणक व्यवहार प्रायः चारि प्रकारें भै सकैछ–समुच्चयार्थक, क्रमार्थक, अंशार्थक एवं आवृत्यार्थक। निश्चयात्मक संख्यावाचकक यैह चारि भेद अछि।

प्रश्न

(१) *विशेष्य ओ विशेषणक परिभाषा लिखू--*

(२) *विशेषणक कतेक भेद अछि, उदाहरण सहित तकर वर्णन करू।*

(३) *निम्नलिखित विशेषणक प्रभेद लिखू।*
कठिन, पुरान, विशाल, अनेक, उत्तम, तृगुण, चतुर्थ, परिश्रमी, दुखो, तेज, बहुत, थोड़।

सर्वनाम

राम बड़ नीक नेना अछि। ओ सब दिन स्कूल जाइत अछि।

हमर गाय दूध दैत अछि। ई कारी अछि।

दोसर वाक्यक 'ओ' रामक हेतु आएल अछि, तहिना चारिम वाक्य मे 'ई' शब्द गायक हेतु आयल अछि। एहिना जे शब्द कोनो संज्ञाक स्थान मे आबै, तकर नाम सर्वनाम थीक।

हम अहाँ सँ नहि लागब। ओ बड़ नीच प्रकृतिक लोक अछि। तों एकरा किछु जनु कहक।

एहि मे हम, तों, अहाँ, ओ, ई इत्यादि सर्वनाम कोनो ने कोनो मनुष्यहिक हेतु आएल अछि तेँ एहि सबकें पुरुषवाचक *सर्वनाम* कहल जाइछ।

टि० [पुरुषवाचक सर्वनामक तीन भेद अछि—'हम' उत्तम पुरुष—बजनिहार, अहाँ, अपने, तोँ मध्यम पुरुष—सुननिहार एवं ई, ओ आदि अन्यपुरुष, अर्थात् जकरा विषयमे कहल जाय। एकरे नाम 'पुरुष' थीक]

ई हमर गाय थीक। ओ अहाँक घोड़ा थीक।

ई ओ निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तुक बदलामे ऐनिहार सर्वनाम कें *निश्चयवाचक सर्वनाम* कहल जाइछ।

कोनो पुस्तक लाउ। केओ आवथु। किछु करथु।

कोनो, केओ, किछु सँ अनिश्चित व्यक्ति वा वस्तुक अर्थ सूचित होइछ, अतः जे सर्वनाम कोनो अनिश्चित व्यक्ति वा वस्तुक हेतु आबै तकर नाम *अनिश्चयवाचक सर्वनाम* थीक।

ई के थिकाह? तों की कहलह?

के, की इत्यादि सँ प्रश्न सूचित होइछ, तेँ जाहि सर्वनाम सँ कोनो प्रश्न वा जिज्ञासा बूझि पड़ै, तकर नाम प्रश्नवाचक थीक।

अपने जे कही, सैह करी ?

जकरा विद्या नहि, तकरा बल कहाँ।

एहिमे जे, से, जकरा, तकरा सँ सम्बन्ध सूचित होइछ, तें जाहि सर्वनाम सँ पारस्परिक सम्बन्ध सूचित हो, तकरा सम्बन्धवाचक सर्वनाम कही।

टि० [सर्वनामो संज्ञाहिक प्रभेद थीक, कारण जे संज्ञाक स्थान मे अबैछ। तेँ संज्ञाक सदृशे एहि मे लिङ्ग, वचन, पुरुष ओ कारक आदि पौल जाइछ]

प्रश्न

(१) सर्वनाम ककरा कहल जाइछ, ई कै प्रकारक होइत अछि ?

(२) 'पुरुष' की थीक ? सर्वनाम मे एकर भेद लिखू।

(३) सम्बन्धवाचक सर्वनाम ककरा कहल जाइछ, उदाहरण द्वारा वर्णन करू।

(४) निम्नलिखित सर्वनामक प्रभेद लिखू—

हमसब, कोन, ककरा, जे, अहाँ, ओ, तोँ, ई, कोनो।



लिङ्ग प्रकरण

ई नेना बड़ बुधियार अछि। ई नेनिया बड़ बुधिआरि अछि। अहाँक गाय कें कोन बच्चा भेल अछि, बाछा की बाछी ? छाँछ पौरल गेल, छाँछी पौरल गेल।

नेना-नेनिआ, बुधियार-बुधिआरि, बाछा-बाछी आदि सँ स्त्री-पुरुषक भेद बूझि पड़ैत अछि। 'बच्चा' शब्द स्त्री-पुरुष दूनूक हेतु प्रयुक्त भेल अछि एवं छाँछ-छाँछी मे तकर कोनो भेद नहि अछि। तें मैथिली शब्दमे चारि गोट लिङ्गक व्यवहार अछि—जाहि शब्द सँ पुरुष जातिक बोध हो तकरा पुंलिंग, जाहि सँ स्त्री जातिक बोध हो तकरा स्त्रीलिङ्ग, जाहि सँ दूनूक बोध हो, तकरा उभय लिङ्ग और जाहि सँ स्त्री वा पुरुष कोनो जातिक सूचना नहि भेटै (यथा अप्राणिवाचक शब्द) तकरा नपुंसक लिङ्ग कहल जाइछ।

स्त्रीलिङ्ग ओ पुंलिङ्ग

माता-पिता, स्त्री-पुरुष, गाय-बड़द

प्राणिवाचक शब्द मे अनेक शब्द स्त्री-पुरुषक हेतु पृथके-पृथके अछि। स्त्रीवाची कें स्त्रीलिङ्ग ओ पुरुषवाची कें पुंलिङ्ग कहल जाइछ।

घोड़ा-घोड़ी, बेटा-बेटी, नाति-नातिन

प्राणिवाचक शब्दमे अनेक शब्द एहन अछि जे पुरुष वा स्त्री-प्रत्यय जोड़ला सँ पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिंग होइछ। आकारान्त शब्द मैथिली मे प्रायः पुलिङ्ग होइछ।

देव-देवी, पुत्र-पुत्री, नर-नारि, सुन्दर-सुन्दरा वा सुन्दरि।

संस्कृत अकारान्त पुलिङ्ग शब्द मे ह्रस्व वा दीर्घ इकार लगौने स्त्रीलिंग बनैछ।

दूबर-दूबरि, सोखगर सोखगरि, आगर-आगरि बताह-बताहि, भूखल-भूखलि।

मैथिलीक आर, गर, आर, आह, अल, आदि, अकारान्त प्रत्यय संयुक्त पुलिङ्ग शब्दकें ह्रस्व इकारान्त बनौला सँ स्त्रीलिंग बनैछ।

मालिन, धोबिन, सिंहिन, सौतिन, चमैन, कुम्हैनि।

एहि सब सँ ई नियम स्पष्ट होइछ जे जाति सूचक संज्ञा तथा किछु पशु-पक्षी, पयन्त मे 'इन' प्रत्यय जोड़ला सँ स्त्रीलिङ्ग बनौल जाइछ, मुदा कहार, चमार, कुम्हार, आदि 'आर' प्रत्ययान्त जातिवाचक, किछु शब्द में 'आ' कें हटाय 'ऐनि' जोड़ला सँ स्त्रीलिङ्ग बनैछ। यथा—कमैनि, चमैन कुम्हैनि आदि।

टि० (लोहार, सोनार, आदि साधारण नियमक अनुसरण करैछ। यथा—लोहारिन, सोनारिन आदि)

घोड़ा-घोड़ी, बेटा-बेटी, काका-काकी, मामा-मामी ।

एहि सँ सूचित होइछ जे आकारान्त सूचक पुलिङ्ग शब्दकें दीर्घ ईकारान्त बनौला सँ स्त्रीलिङ्ग बनैछ ।

पंडित-पंडिताइन, ठाकुर-ठकुराइन, पंडा-पंडाइन ।

एहि सँ ई नियम भेल जे कतोक उच्च जाति सूचक शब्द मे 'आइन' लगौला सँ स्त्री-लिङ्ग बनैछ ।

चोर-चोरनी, मास्टर-मास्टरनी मुखतार-मुखतारनी, मेहतर-मेहतरनी, राजपूत-राजपूतनी, तिरहुतिया-तिरहुतनी आदि ।

एहि सँ ई नियम भेल जे कतोक जाति-सूचक (छोट वा पैघ) शब्द मे 'नी' लगैछ ।

माला, गाथा, बाला, पंडिता, चतुरा, विद्या, कला ।

संस्कृत आकारान्त स्त्री-लिङ्ग शब्द मैथिलीहु मध्य स्त्री लिङ्ग रहैछ ।

बाप-माय, बर-कन्या, भाय-बहिन गाय-बड़द ।

एहि सब सँ ई बुझना जाइछ जे प्राणिवाचक शब्द मे कतोक नाम स्त्री-लिङ्ग तथा पुलिङ्गक सर्वथा भिन्ने अछि ।

—०—

उभय लिङ्ग

पशु पक्षी, जीव-जन्तु, लोक, समाज, नेना, भुटका

एहि सब शब्द सँ स्त्री-पुरुष दूनूक बोध होइत अछि तेँ एहन शब्द उभय लिङ्ग कहल जाइछ।

माछ, घड़ियाल, सोँसि, नकार

एहि प्रकारक जीव-जन्तु वा पशु-पक्षी मे यावत् नरमेदी नहि लगौल जाइछ, तावत् दूनू लिङ्गक बोध होइछ, तें इहो सब उभय लिङ्गी शब्द थीक।

गाछ-वृक्ष, फलफूल

एहू सब शब्द सँ दूनू लिङ्गक बोध होइछ, तेँ एहि प्रकारक बनस्पति सूचक शब्द उभय लिङ्ग थीक।

टि० [किछु फूल संस्कृतक अनुसार स्त्रीलिङ्ग वा पुलिङ्ग मानल जाइछ यथा—चम्पा, चमेली, बेली, रजनीगन्धा, केतकी आदि स्त्री-लिङ्ग। किन्तु बकुल, श्रृंगारहार (सिङरहार) अढ़ूल आदि पुलिङ्ग थीक। कमल-कमलिनी, सरोजिनी, कुमुद-कुमुदिनी आदि मे तद्रूपे लिङ्ग भेदक कल्पना कैल जाइत अछि) मुदा कियामे कोनो अन्तर नहिं पड़ैछ।]

नपुंसक लिङ्ग

काठ, माटि, जल, घास, आगि, पानि

ई सब निर्जीव वस्तुक नाम थीक अतः एहि सब मे स्त्री-

पुरुषक कोनो भेद वा भावना नहि अछि। ई सब तथा आनो निर्जीव पदार्थ सभक नाम नपुंसक लिङ्ग थीक।

टि०—[छाँछ,छाँछी. कोहा-कोही आदि से स्त्रीलिङ्ग वा पुलिङ्गक भाव नहि अछि। छाँछी, कोही आदि छाँछी, कोही आदि छाँछ, कोहा आदिक ऊनार्थ-वाची अर्थात् क्षुद्र रूप सूचक शब्द थीक। देखू तद्धित प्रकरण, ६५-६६]

प्रश्न

(१) लिङ्ग ककरा कही, ई कै प्रकारक अछि ?

(२) मैथिली मे लिङ्ग भेदक सिद्धान्त की अछि ?

(३) प्राणिवाचक शब्द मे लिङ्ग निर्माणक नियम की अछि, उदाहरण सहित लिखू।

(४) निम्नलिखित शब्दक लिङ्ग निर्देश करू तथा वाक्य में प्रयोग करू—समता, मानुषी, लोक, दीप, नदी, माला, देवी, नेना, घास, बांस माछ।

(५) निम्नलिचित शब्दक विपरीत लिङ्ग वाला शब्द लिखू। गाय, राजा, भाइ, परोसिआ, सिंह, मुसलमान, बैरी, मुसहर, कुजरा, पूता, पुतरा, पुरुष।

वचन

एक टा घोड़ा चरैत अछि, दूटा घोड़ा चरैत अछि। बहुत घोड़ा चरैत अछि। एक बालिका आइलि वा ऐलि। अनेक बालिका (गण) आइलि वा ऐलीहि।

एहि सँ ई स्पष्ट बुझना जाइछ जे मैथिली मे नाम-मात्रक दू वचन अछि, एक वचन आ' बहुवचन मुदा एहि कारणे शब्द रूप वा धातु रूप मे कोनो अन्तर नहि पड़ैछ। एक व्यक्ति वा वस्तुकें एक वचन ओ दू वा दू सँ अधिक व्यक्ति वा वस्तुकें बहुवचन कहल जाइत अछि।

पुरुष

हम वा हम सब अहाँक वा अहाँ सभक भात खैलहुँ।
अहाँ वा अहाँ सब हमरा सबहक भात खैलहुँ।
हम वा हम सब तोहर वा तोरा सभक भात खैलिअहु।
हम वा अहाँ हुनकर भात खैलिऐन्हि।
हम वा अहाँ ओकर भात खेलिऐक।
तोँ हमर भात खैलह। तोँ हुनक भात खैलहुन्ह।
तोँ ओकर भात खैलहक। ओ हमर वा अहाँक भात खैलन्हि। ओ हुनक वा ओकर भात खैलथिन्ह।
ओ हमर वा अहाँक भाए खैलक। ओ हुनक भात खैलकैन्हि ओ ओकर भात खैलकैक।

एहि सब उदाहरण सँ स्पष्ट बूझि पड़ैत अछि जे मैथिलीक क्रिया मे लिङ्ग ओ वचनक कारणे प्रायः कोनो अंतर नहि पड़ैछ परन्तु 'पुरुष'क प्रयोग जतेक परिवर्त्तित भेल, धातु-

रूपहु मे ततबै परिवर्त्तन होइत गेल। अतः स्पष्ट भेल जे मैथिलीक धातु रूपावली में 'पुरुष' अनिवार्य रीतियें सम्मिलित रहैछ। ततबे नहि, मैथिलीक क्रिया सँ भिन्न-भिन्न पुरुषक आदर भाव, साधारणता ओ निरादर (वा आदराभाव) क श्रेणी सेहो प्रत्यक्ष होइछ। ई विशेषता आन कोनो भाषा म नहि छैक। 'खेलथिन्ह' केवल एतबै कहला सँ अर्थ अबैछ जे कर्त्ता आदर सूचक छैक तथा सम्पर्की पुरुष आदराभावक छैक इत्यादि। अतः 'पुरुष' क नियम स्पष्ट रीतियें ध्यान मे राखब अनिवार्य अछि।

टि० [पूर्व मे कहि ऐल छी जे हम, हमसब उत्तम पुरुष, अहाँ, अपने, तों मध्यम पुरुष तथा ओ, ई आदि अन्य पुरुष थीक अर्थात् मैथिली मे तीन पुरुष अछि।]

प्रश्न—

(१) *मैथिली मे वचनक प्रयोग कोना होइछ, उदाहरण द्वारा बुझाउ।*

(२) *'पुरुष' कै गोट अछि, तथा मैथिली मे एकर प्रयोजन की अछि ?*

(३) *क्रियाक रूपावली पर वचनक की प्रभाव अछि ?*

कारक

"राम रावण बाण सीता रथ लंका युद्ध मारि खसौलन्हि"

ई सब संज्ञा क्रिया सँ सरोकार रखैछ मुदा यदि हम एहि सब संज्ञा कें एही रीतिएँ राखि दी तँ कोनो अर्थ स्पष्ट नहि हैत। मुदा जँ एना राखी—

"राम रावण कें वाण सँ सीताक हेतु रथसँ लंकाक युद्ध मे मारि खसौलन्हि" तँ अर्थ एकदम स्पष्ट भै जाइछ। एहि सँ ई निश्चय भेल जे क्रिया सँ सम्बद्ध रहितहुँ यदि संज्ञाक कें चिह्न द्वारा एक दोसरा सँ विभक्त नहि कै देल जाय तँ ओकर अर्थ स्पष्ट नहि भै सकैछ। एही कारणे एहि चिह्न कें 'विभक्ति' कहल जाइछ। जैं हेतु संज्ञाक सम्बन्ध क्रिया सँ अनेक प्रकारक रहैछ, तें ओकर विभक्ति वा चिह्नो अनेक अछि। क्रिया सँ प्रत्येक प्रकारक सम्बन्ध कें एकटा 'कारक' कहल जाइछ। प्रत्येक कारकक हेतु भिन्ने चिह्न वा विभक्ति अछि।

उपरक वाक्य मे क्रिया अछि 'मारि खसौलन्हि'। आब एहि मे 'के' मिलाय एना प्रश्न करू—के मारि खसौलन्हि ? उत्तर भेटल—'राम'। यैह 'राम' कर्त्ता कारक भेल। जे कार्य करै से थीक *कर्त्ता कारक*। एकर कोनो चिह्न नहि अछि। ई स्वतंत्र रहैछ।

तहिना 'कि वा ककरा' मिलाय प्रश्न करू—'ककरा मारि खसौलन्हि। उत्तर भेटल—'रावण कें'। तें रावण भेल कर्म। जकरा उपर क्रियाक फल पड़ै से थीक 'कर्मकारक'। एकर चिह्न 'कें' थीक।

टि० [कर्म कारकक चिह्न अप्राणिवाचक शब्दक परताँ प्रायः

लुप्त भै जाइछ। यथा—हम भात खैलहुँ। भात के खैलहुँ, अशुद्ध हैत।]

आब 'कथी सँ' मिलाय प्रश्न करू--उत्तर भेटल-वाण सँ। यैह भेल करण कारक। जकरा द्वारा वा जाहि सँ क्रिया कैल जाय सैह थीक 'करण' कारक एकर चिह्न सँ थीक। विकल्प सँ ई चिह्न शब्द रूप मे अनुस्वार पूर्वक एकार सँ व्यक्त होइछ, यथा--अपना हाथेँ कैलहुँ।

तखन 'कथीलए' ककरा हेतु वा लेल' मिलाए प्रश्न करू, उत्तर भेटल--'सीताक हेतु' तेँ सीता भेल सम्प्रदान कारक। जकरा हेतु क्रिया कैल जाय, सैह थीक 'सम्प्रदान'। एकर चिह्न 'केँ' 'क लेल' 'क हेतु' आदि हेत्वथ सूचक शब्द अछि।

पुनः 'कथी सँ' वा 'कहाँ सँ' मिलाय प्रश्न कैने उत्तर भेटैछ, रथ सँ। यैह भेल *अपादानकारक*। जकरा सँ कोनो व्यक्ति वा वस्तु फराक होइत हो, से थीक 'अपादान'। एकर चिह्न 'सँ' थीक जे करण कारकक चिह्न 'सँ' सँ अर्थ मे भिन्न अछि।

तहिना युद्ध मे ककर वा कोन स्थानक मिलाय प्रश्न कैने उत्तर भेटल 'लंकाक'। यैह भेल सम्बन्ध कारक। जाहि वस्तु सँ सम्बन्ध देखौल जाइछ, तकरा मे पहिना 'कथीक', 'ककर' आदि जोड़ल जाइछ सैह थीक 'सम्बन्ध कारक' एकर चिह्न 'क' 'केर' तथा 'र' 'न' अछि। 'र' 'न' क व्यवहार सर्वनाम मे तथा 'केर' क पद्यादि वा प्राचीन मैथिली मे अछि।

क्रियामे 'कतै' 'ककरामे' अथवा 'कथीमे' 'कथी पर' 'ककरा पर' आदि मिलाय प्रश्न कैला सँ अधिकरण कारक उत्तर भेटैछ। एहि ठाम 'युद्ध' शब्द अधिकरण भेल। एकर चिह्न 'मे' मध्य' 'माँझ' 'पर' आदि थीक।

यैह वाक्य यदि ककरो सम्बोधन कै कहल जाय तँ ओकरे नाम 'सम्बोधन' हेतैक। एकर चिह्न मैथिली मे पुरुषक हेतु-ओ' हौ, रौ, तथा स्त्रीक हेतु 'ऐ, है, गै अछि।

टि० [सम्बन्ध एवं सम्बोधनकें यथार्थ पूछी तँ क्रिया सँ सम्बन्ध नहि रहैत छैक अतः ई दूनू कारक नहि थीक तथापि विभक्तिक द्वारा आन संज्ञा सँ संज्ञाकें विभक्त करैछ तें इहो कारकमे युक्त अछि। एवं क्रमे कुल आठ कारक अछि। कर्त्ता. कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, ओ सम्बोधन। कारक अथवा वचनक कारणेँ मैथिली में शब्दक रूपान्तर बड़ थोड़ होइछ तथापि किछु शब्द रूप एहिक्रमें आगाँ देल जैत।

प्रश्न

(१) कारक ककरा कही? ई कै गोट अछि?

(२) एक वाक्य बनाउ जाहिमे आठो कारकक प्रयोग होइ।

(३) निम्नलिखित रेखांकित शब्दमे कोन कारक छैक, लक्षण सहित वर्णन करू।

(क) अपना मुहें मीआं मिट्ठू। (ख) धोबि गदहा तकैत अछि। (ग) तिलमे तेल छैक। (घ) धोबिकें कपड़ा दिऔ। (ङ) ब्राह्मणकें दक्षिणा दिऔन्ह। (च) बालककें जनु मारिऔ। (छ) स्टेशन सँ नदी पर्यन्त लोक अछि।

——

शब्द रूप

बालक शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बालक	बालकगण, बालक सब
कर्म	बालक, बालककें	बालक सब, बालक सबकें
करण	बालक सँ	बालक सबस
सम्प्रदान	बालकके, क हेतु	बालक सभकें, क हेतु
अपादान	बालक सँ	बालक सब सँ
सम्बन्ध	बालक क	बालक सभक
अधिकरण	बालकमे, पर	बालक सबमे, पर
सम्बोधन	हे बालक	हे बालकगण

एही प्रकारें प्रत्येक संज्ञाक रूप भिन्न-भिन्न कारक ओ बचनमे मैथिलीमे होइत अछि। एहि सँ ई निश्चित भेल जे मैथिली मे कोनो शब्दक रूप मे वचन अथवा कारकक कारणे परिवर्त्तन नहि होइछ। बहुवचन मे सब, गण, लोकनि आदि बहुवचन सूचक शब्द मात्र जोड़ल जाइछ एवं भिन्न-भिन्न कारक मे ओहि कारकक चिह्न लगौल जाइछ।



क्रियार्थक संज्ञाक रूपावली

सर्वत्र एकवचनान्त

	अकारान्त	आकारान्त		ईकारान्त	ऊकारात	एकारान्त	ओकारान्त
	कर	जा	पा	जी	चू	दे	हो
कर्त्ता	करब	जाए(जै)ब	पाए(पै)ब	जीब	चूअब	देब	हैब
कर्म	करब	जाए (जै)ब	पाए (पै)ब	जीब	चूअब	देब	होए है)ब
करण	करबासँ	जैबासँ	पैबा सँ	जीबा(ला)सँ	चूबा ला(सँ)	देबा (ला) सँ	होए (है) बासँ
	कैने (लें)	गेने (लें),	पैने (लें),	जीने,	चूबा(ल)सँ	देवा (ला) सँ	भेला सँ
			पौने (लें)	जीलें	चूने (लें)	देने (लें)	भेने (लें)
सम्प्र०	करबालै	जैबालै	पैबालै	जीबालै	चूबालै	देबा लै	होए (है) बालै
अपा०	करबासँ	जैबासँ	पैबासँ	जीबासँ	चूलासँ	देला सँ	भेला सँ
सम्ब०	करबाक	जैबाक	पैबाक	जीबाक	चूबाक	देबा (ला)क	भेलाक
अधि०	करबासे,	जैबामे,	पैबा मे,	जीबामे,	चूबामे,	देबामे,	होए (है) बामे,
	पर	पर	पर	पर	पर	पर	पर

टि० [क्रियार्थक संज्ञाक बहुवचन रूप नहि होइछ, और एहि मे सम्बोधन कारकक रूप नहि होइछ ।]

सर्वनाम रूपावली

उत्तम पुरुष 'हम' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	हम	हम सब, हमरा लोकनि
कर्म	हमरा	हमरा सबकें, लोकनिकेँ
करण	हमरा सँ, हमरें	हमारा सबसँ, हमरा लोकनिसँ
सम्प्र०	हमरालै	हमरा सबलै, हमरा लोकनिलै
अपा०	हमरासँ	हमरा सबसँ, हमारा लोकनिसँ
सम्ब०	हमर	हमरा सभक, हमरा लोकनिक
अधि०	हमरामे, पर	हमरासबमे, पर लोकनिमे, पर

एहि सँ ई स्पष्ट भेल जे सर्वनामहुक रूपमे मैथिली मे वचनक कारणे कोनो अन्तर नहि होइछ। केवल 'सब' अथवा 'लोकनि' आदि बहुवचन सूचक शब्द जोड़ला सँ बहुवचन रूप बनैत अछि। मुदा आदरादि भावक क्रमे रूपान्तर होइछ।

सर्वनाममे सम्बोधनक रूप नहि होइछ। तेँ आगाँ केवल एकवचन रूप सातो कारक देल जाइछ। प्रयोजन पड़ला सँ एही रीतिएँ ओकर बहुवचन बनैबाक चाही।

मध्यम पुरुष अपन, अहाँ, तोँ शब्द

	अत्यादर	आदर	सामान्य	आदराभाव
कर्त्ता	अपने	अहाँ	तोँ	तोँ
कर्म	अपने केँ	अहाँके	तोहरा	तोरा

	अत्यादर	आदर	सामान्य	आदराभाव
करण	अपने सँ	अहाँ सँ	तोरा सँ, तोहरें	तोरा सँ, तोरें
सम्प्र०	अपने लै,	अहाँ लै	तोहरालै	तोरा लेल
	अपनेक लेल,	अहाँक लेल	तोहरा लेल	तोरा लेल
अपा०	अपने सँ	अहाँ सँ	तोहरा सँ	तोरा सँ
सम्ब०	अपनेक	अहाँक	तोहर, तोहरा	तोर, तोरा, तोरी
अधि०	अपने मे, पर	अहाँ मे, पर	तोहरा मे, पर	तोरा मे, पर

एहि सँ ई सिद्ध भेल जे मध्यम पुरुषमे आदरादिक क्रमे चारि रूप होइत अछि जकर व्यवहार व्यक्तिक आदरादि भावक क्रमे होइछ। बहुवचन तँ एहूमे 'सभक' 'लोकनि' इत्यादि लगाय बनौल जैत।

टि०—तोरा तोरी सँ हिन्दीक स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग आदिक भ्रम नहि करी यथा—तोरा मायकें दही छौ? तोरा गाछीमे आम छौ? तोरी छौंड़ी के, तोरी वा तोरा भलाकें, आदि विस्मयादिबोधक शब्द थीक, लिङ्गबोधक नहिं।

अन्य पुरुष 'ई' शब्द

	आदर	आदराभाव	अप्राणिवाचक
कर्त्ता	ई	ई	ई
कर्म	हिनका	एकरा	एकरा
करण	हिनकासँ	एकरा सँ,	एहिसँ
सम्प्र०	हिनकालै,	एकरा लै,	एहिलै

	आदर	आदराभाव	अप्राणिवाचक
सम्प्र०	हिनका लेल	एकरा लेल	एहिलेल आदि
अपा०	हिनका सँ	एकरा सँ	एहि सँ
सम्बन्ध	हिनक, हिनकर, हिनका	एकर, एकरा	एकर
अधि०	हिनकामे, पर	एकरामे, पर	एहिमे, पर

अन्य पुरुषक रूपमे आदरक अतिरिक्त प्राणिवाचक एवं अप्राणिवाचक क्रमे रूपान्तर होइछ। एही रीतिएँ 'ओ' शब्दक कर्त्ता, कर्म मे हुनका, ओकरा तथा करणादि कारक मे अप्राणिवाचक मे 'ओहि' होइछ। 'जे' शब्दक जनिका, जकरा, जाहि, 'से' शब्दक हिनका, तकरा, ताहि तथा 'के' शब्दक किनका, ककरा की, कथी, आदि भै जाइछ।

अन्य पुरुष 'आन' शब्द

	प्राणिवाचक	अप्राणिवाचक
कर्त्ता	आन	आन
कर्म	आनकें, अनका	आन
करण	आनसँ, अनकासँ, आनें, अनकें	आनसँ, आने
सम्प्र०	अनका आनकें, अनकालै	आनकें, अनकालै
अपा०	अनकासँ आनसँ	आनसँ
सम्बन्ध	अनकर, आनक, अनका	आनक
अधि०	अनकामे आनमे अनका पर, आन पर	आनमे, आन पर

(१) मैथिली में शब्दरूप कोन कारणे बदलैत अछि ?
(२) वचनक कारणे शब्द रूपावाली मे की परिवर्त्तन होइछ ?
(३) हाथी, लोटा तथा गरै शब्दक रूप आठो कारक आ' दूनू वचन मे लिखू ।
(४) क्रियार्थक संज्ञाक व्यवहार भिन्न-भिन्न कारकमे करैत ओकर रूपावली देखाउ ।
(५) सर्वनामक रूप कै प्रकारक होइछ, तकर कारण सोदाहरण देखाउ ।
(६) अन्य पुरुष सर्वनामक रूपान्तर अप्राणिवाचक मे कोना होइछ, करण, सम्प्रदान एवं अधिकरण मे देखाऊ ।
(७) 'आन' शब्दक रूप सब कारक मे लिखू ।

क्रिया प्रकरण

तोँ कतै जाइत छह ? रामू श्यामकेँ देखलक ।

एहिमे 'जाइत छह' तथा 'देखलक' शब्द सँ कोनो कार्यक हैब सूचित होइछ तेँ एहि प्रकारक शब्द केँ क्रिया कहल जाइछ।

'जाइत छह' कहने बोध होइछ जे एहि काजक फल कैान हारहिपर होइछ मुदा 'देखलक'—एहन क्रिया सँ बूझि पड़ैछ जे एकर फल दोसराक ऊपर (एहिठाम श्यामपर) पड़ैछ, तेँ क्रियाक दू भेद अछि—अकर्मक ओ सकर्मक।

जाहि क्रियाक फल कर्त्तहि पर समाप्त होइछ से अकर्मक

और जकर फल दोसराक ऊपर पड़ैक, से सकर्मक क्रिया थीक। सूतब, जागब, हँसब, कानब आदि अकर्मक एवं बाजब, देखब, सुनब, मारब, खैब आदि सकर्मक थीक।

क्रियाक वाच्य भेद

मोहन काज करैत अछि। राम सूतल अछि।

मोहन सँ काज कैल जाइत अछि! राम सँ नहि सूतल जाइत छैक।

एहि सब वाक्य पर बिचार कैने बूझि पड़त जे पहिलुक दूनू वाक्यमे कर्त्ता प्रधान अछि एवं पाछाँक दूनू वाक्य मे कर्म अथवा क्रियाक भावे प्रधान अछि। एहि दूनूमे कर्त्ताक प्रधानता किछु नहि अछि। फेर दू टा वाक्य लिअ।

गुड्डी कटि गेल। ई दोकान खूब चलल अछि।

एहि दूनू वाक्य मे गुड्डी एवं दोकान वास्तव मे 'काटब' एवं 'चलाएब' क्रियाक कर्म थीक। एहि क्रियाक कर्त्ता छल (बालक अथवा वणिक) गुड्डी कँ काटलन्हि अथवा दोकान चलौलन्हि, मुदा ताहि रीतिसँ एकर व्यवहार नहि भै कर्म कर्त्ताक रूपमे आबि गेल अछि एवं गुड्डी कटि गेल अथवा दोकान चलि गेल आदि रूपक व्यवहार भेल। तें एहिमे कर्म ओ कर्त्ता दूनूक भाव अछि—

तेँ क्रियाक जाहि रूप सँ कर्त्ताक प्रधानता सूचित हो तकरा कर्तृवाच्य, जाहि रूप सँ कर्मक प्रधानता बूझि पड़ै तकरा

कर्मवाच्य (ई केवल सकर्मक क्रिया मे हैत), जाहि रूप सँ केवल क्रियाक भावक प्रधानता सूचित हो तकरा *भाववाच्य* (ई केवल अकर्मके क्रियामे हैत) और जाहि रूप सँ कर्त्ताक कर्तृत्व केवल लाक्षणिक हो, वास्तविक नहि, तकरा *कर्मकर्तृवाच्य* कहल जाइछ (ई केवल तेहने अकर्मक क्रिया मे होइछ, जे पहिने सकर्मक क्रिया छल)। क्रियामे यैह चारि वाच्य होइछ, मुदा रूपावलीक हिसाबेँ भाववाच्यक रूप कर्मवाच्यक सदृशे होइछ, एवं कर्मकर्तृ वाच्यक रूप कर्तृवाच्यक सदृश होइछ तेँ क्रियाक रूपावली दुइए प्रकार होइछ-कर्तृवाच्य ओ कर्मवाच्य।

क्रियाक भाव--भेद

(१) गोपाल हमर सिलेट फोड़ि देलक।

(२) गोपाल हमर सिलेट फोड़ने होएत।

(३) गोपाल हमर सिलेट जनु फोड़ह।

(४) गोपाल दीर्घायु होथु।

उपरक चारू उदाहरण सँ क्रियाक चारि भाव बुझना जाइछ। प्रथम वाक्य सँ क्रियाक *निश्चयता*, दोसर सँ अनिश्चयता, तेसर सँ अनुज्ञा, आग्रह वा निषेध चारि सँ कामना वा आशीर्वाद बुझना जाइछ। यैह चारिम गोट क्रियाक भाव थीक-(१) निश्चयात्मक भाव, (२) अनिश्चयात्मक भाव, (३) अनुज्ञात्मक एवं (४) कामनात्मक।

टि० (अनुज्ञा और कामनात्मक भावक क्रियाके कालक कोनो भेद नहि अछि। केवल एके एके-रूप सब कालक हेतु एहि दूनू भाव में व्यवहृत होइछ। हँ, पुरुषक कारणे एकर रूप बदलैत छैक मुदा कालक लेखें एके रूप रहैछ। निश्चयात्मक तथा अनिश्चयात्मक भावमे भिन्न-भिन्न हेतुएँ क्रियाक रूप भिन्न-भिन्न होइछ।
तकरे क्रियाक रूपावली कहल जाइछ।

क्रियाक काल-भेद

राम भात खाइत अछि। राम भात खैलक।
राम भात खैत।

'खाइत अछि', 'खैलक' ओ 'खैत' सँ बूझि पड़ैछ जे क्रियाक काल भिन्न भिन्न अछि। खैलक, सँ बूझि पड़ैछ जे क्रिया भै चुकल अछि तें ई *भूतकालक* क्रिया थीक। 'खैत' सँ बूझि पड़ैछ जे क्रिया भेल नहि अछि, आगाँ हैत। तें ई *भविष्यत्काल* थीक। एवं 'खाइत अछि' सँ बूझि पड़ैत जे क्रिया होइत अछि, तें ई वर्त्तमानकालक क्रिया थीक। येह तीनू *भूत*, *वर्त्तमान* ओ *भविष्यत्* कालक मोटामोटी तीन भेद अछि। आब एकरो अन्तर्विभाग अछि से बूझू।

निश्चयात्मक भाव

भूतकाल

हम गेलहुँ वा भात खैलहुँ [सामान्य]

हम जाइत छलहूँ वा भात खाइत छलहुँ [अपूर्ण]

हम गेल छलहुँ वा भात खैने छलहुँ [पूर्ण]

हम जाय रहल छलहुँ वा भात खाय रहल छलहुँ [तात्कालिक]

उपर्युक्त उदाहरण सँ ई बूझल जाइछ जे ई सब क्रिया भूतकालक थीक मुदा पहिल रूप सँ क्रियाक साधारण समाप्ति, दोसर रूप सँ ओकर अपूर्णता, तेसर रूप सँ पूर्णता एवं चारिम सँ तात्कालिकताक बोध होइछ, तें भूतकालक चारि भेद अछि—सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण ओ तात्कालिक भूत।

——

वर्तमान काल

हम जाइत छी वा भात खाइत छी [सामान्य वा अपूर्ण]

हम गेल छी वा भात खैने छी [पूर्ण]

हम जाय रहल छी वा भात खाय रहल छी [तात्कालिक]

एहि सब उदाहरण सँ ई बोध होइछ जे वर्तमान कालक

तीन भेद अछि। जाहि वर्त्तमानकालक रूप सँ क्रियाक सामान्यता वा अपूर्णताक बोध हो तकरा सामान्यवर्त्तमान, जाहि सँ पूर्णताक बोध हो तकरा पूर्णवर्त्तमान, एवं जाहि सँ तत्काल क्रिया हैबाक सूचना भेटै तकरा तात्कालिकवर्त्तमान कहल जाइछ। पूर्ण वर्त्तमान कें किछु व्यक्ति आसन्नभूत कहै छथि मुदा ई केवल नामक अन्तर थीक। वर्त्तमान काल में सामान्य और अपूर्णक रूप एके रहैछ।

भविष्यत् काल

हम जैब वा भात खैब [सामान्य]

हम जाइत रहब वा खाइत रहब [अपूर्ण]

हम गेल रहब वा खैने रहब [पूर्ण]

एहि सब सँ निश्चित भेल जे भविष्यत् कालक तीन भेद अछि। एहि कालक सामान्य क्रिया कें सामान्य भविष्यत् अपूर्ण रूप कें अपूर्णभविष्यत् आ पूर्ण रूप कें पूर्णभविष्यत् कहल जाइछ। तात्कालिक रूप नहि होइछ।

टि० [निश्चयात्मकभावक क्रियाक यैह दश गोट काल होइछ एवं एकरे दश गोट रूप अछि]

नीचाँक कालचक्र एकरा अधिक स्पष्ट करत।

काल चक्र (१)

निश्चयात्मक भाव [उत्तम पुरुष]

'आ' धातु अकमंक

'खा' धातु सकमंक

	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
भूत	ऐलहुँ	अबै (त) छलहुँ	ऐल छलहुँ	आबि रहल छलहुँ
	खैलहुँ	खाइ (त) छलहुँ	खैने छलहुँ	खाय रहल छलहुँ
भविष्यत्	ऐब	अबैत रहब	ऐल रहब	×
	खैब	खाइत रहब	खैने रहब	×
वर्त्तमान	(अभाव)	अबैत छी	ऐल छी	आबि रहल छी
,,		खाइत छी	खैने छी	खाय रहल छी



अनिश्चयात्मक भाव

भविष्यत् काल

हम जैतहुँ वा भात खैतहुँ [सामान्य]

हम जाइत हैब वा खाइत हैब [अपूर्ण]

हम जाइत रहितहुं वा खाइत रहितहुं [अपूर्ण]

वम गेल हैब वा खैने हैब [पूर्ण]

हम गेल रहितहुं वा खैने रहितहुं [पूर्ण]

हम जाय रहल हैब वा खाय रहल हैब—तात्कालिक

पहि सब उदाहरण सँ इ स्पष्ट भेल जे अनिश्चयात्मक

अथवा सन्देहात्मक भाव मे भूतकालक चारि भेद होइछ। जाहि अनिश्चयात्मक भूत काल सँ सामान्यताक बोध हो तकरा सामान्यभूत, जाहि सँ अपूर्णताक बोध हो तकरा अपूर्णभूत, जाहि सँ पूर्णताक बोध हो तकरा पूर्णभूत एवं जाहि सँ तात्कालिकताक बोध हो तकरा तात्कालिकभूत कहल जाइछ। एहि काल पर और स्पष्ट उदाहरण द्वारा विचारू—

गोविन्द—सुरेश, अहाँ अपन साइकिल दितहुँ तँ हमरा गाड़ी नहि छूटैत।

ई अनिश्चयात्मक सामान्यभूतक उदाहरण भेल मुदा एकर व्यवहार वर्त्तमान ओ भविष्यत्‌क हेतु सेहो भै सकैछ। अन्यान्य व्याकरणमे एही रूप केँ हेतुहेतुमद्भूत रूप कहल गेल अछि। मुदा सब वैयाकरण एकरा भूते काल मानने छथि।

सुरेश—हमरा नहि केओ कहलक जे तों ऐल छलाह।

गोविन्द—अहाँ सूतल हैब तँ केओ नहि कहने हैत।

एहिठाम गोविन्दक उक्ति अनिश्चयात्मक भावक पूर्णभूतकाल मे अछि। अर्थ स्पष्ट छैक। एहि क्रियाक व्यवहार मैथिली मे प्रचूर अछि।

सुरेश—नहि, हौ, हम ओहि कालमे सुस्ताइत हैब वा खाइत हैब, तँ केओ नहि टोकने हैत।

गोविन्द—भै सकैछ, अहाँ खाय रहल हैब अथवा सुताय रहल हैब इत्यादि।

एहि मे सुरेशक उक्ति अनिश्चिते भावक अपूर्णभूत मे अछि। मुदा गोविन्दक उक्ति तात्कालिक भूतमे अछि। एकर व्यवहार बड़ थोड़ अछि मुदा अपूर्णभूतक व्यवहार पर्याप्त अछि।

एहि सँ ई निश्चित भेल जे अनिश्चयात्मक भाव मे भूतकालक चारि प्रभेद अछि—(१) सामान्य (२) अपूर्ण (३) पूर्ण तथा (४) तात्कालिक। ह, एकरा अपूर्ण ओ पूर्ण काल मे दू-दू रूप होइछ, से उपरक उदाहरण मे स्पष्ट कैल गेल अछि।

—o—

वर्त्तमान काल

हम जाइत होइ वा खाइत होइ [अपूर्ण]

हम गेल होइ वा खेने होइ [पूर्ण]

हम जाय रहल वा खाय रहल होइ [तात्कालिक]

एहि सँ स्पष्ट अछि जे अनिश्चयात्मक भावक वर्त्तमान कालक तीन भेद अछि—अपूर्ण, पूर्ण ओ तात्कालिक। अर्थ स्पष्ट अछि ओ व्यवहारो प्रचुर अछि।

टि० [एकर सामान्यरूप भूतकालहिक सदृश अछि जे कि हेतुहेतुमद्भूतक रूप थीक।]

भविष्यत् काल

हम जाइ अथवा खाइ [सामान्य]

हम जाइत रह आ खाइत रही [अपूर्ण]

हम गेल रही वा खैने रही [पूर्ण]

एहि सँ ई स्पष्ट भेल जे भविष्यत् कालक सम्भाव्य अथवा अनिश्चयात्मक रूप तीन प्रकारक अछि-पूर्ण, अपूर्ण आ तात्कालिक। सामान्य रूप एकरो सैह हैत जे पूर्वमे वर्त्तमान एवं भूतक लिखल गेल अछि अर्थात् हेतुहेतुमद्भूत।

तात्कालिक एवं पूर्ण रूपक विषयमे ई स्मरण राखब आवश्यक अछि जे ई रूप क्रमशः अपूर्ण एवं पूर्ण भूतकाल निश्चयात्मक भावहुमें व्यवहृत होइछ मुदा तखन एकर अर्थ एकदम भिन्न होइछ। उदाहरण लिअ—परसू गाम जाइत रही तखन घूटर काका अबैत रहथि—निश्चयात्मक अपूर्णभूत।

हम टिकट कटौने रही, आ' अहाँ दश बजे धरि स्टेशन पहुँचि जाइ तँ संभव जे गाड़ी भेटि जाय—एहिमे 'कटौने रही' ई क्रिया पूर्वक उदाहरण जकाँ विश्चयात्मक नहि, अनिश्चयात्मक पूर्ण भविष्यत् कालक थीक। दोसर वाक्य-की अपनेक यैह इच्छा जे हमर पहिना क्षति होइत रहै आ, हमर शत्रु चैन करैत रहै ?—अनिश्चयात्मक तात्कालिक भविष्यत्।

एहि सँ ई स्पष्ट भेल जे अनिश्चयात्मक भाव मे क्रियाक

दश टा काल अछि एवं तकर रुपो पृथक छैक। एतवा निश्चय जे अनिश्चयात्मक (सन्देहात्मक) क्रियाक व्यवहार ओतेक नहि अछि जतबा निश्चयात्मम भावक। एकर अतिरिक्त भविष्यत् काल मे एहि भावक रूप प्रायः कामनात्मक रूप में परिणत भै जाइछ, कारण जे दूनू सम्भावने मात्र थीक। नीचाँक चक्र एकरा अधिक स्पष्ट करत—

कालचक्र—(२)

अनिश्चयात्मक भाव [उत्तम पु०]

'आ' धातु अकर्मक
'खा' धातु सकर्मक

	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
भूत	अबितहुँ	अबैत हैब, वा रहितहुँ	ऐल हैब वा रहितहुँ	आबि रहल हैब
	खैतहुँ	खाइत हैब वा रहितहुँ	खैने हैब वा रहितहुँ	खाय रहल हैब
भविष्यत्	आबी	अबैत रही	ऐल रही	×
	खाइ	खाइत रही	खैने रही	×
वर्त्तमान		अबैत होइ	ऐल होइ	आवि रहल होइ
×		खाइत होइ	खैने होइ	खाय रहल होइ

टि० [स्पष्ट अछि जे अनिश्चयात्मको भाव मे कालक दश भेद अछि, व्यवहार भने कम हो]

प्रश्न—

(१) कोन प्रकारक शब्द कें क्रिया कहल जाइछ? ई कै प्रकार होइत अछि? सोदाहरण लिखू।

(२) क्रिया मे कै गोट वाच्य होइछ, उदाहरण दिअ।

(३) कालक की अर्थ, ई कै प्रकारक अछि?

(४) क्रियाक भावसँ की बुझैत छी; ई कै प्रकारक अछि? प्रत्येकक चारि चारिटा उदाहरण दिअ।

(५) निम्नलिखित वाक्यक क्रिया-पदक भाव ओ काल निर्देश करू—

हमरा घोड़ा रहैत तँ गाम जैतहुँ।

भगवान हुनका शीघ्र आरोग्य करथुन्ह।

चारि पैरक हाथी पिछड़ि जाइत अछि।

मोहन रोटी तरकारी खैलक अछि।

तों कखन स्टेशन जेबह?

इच्छा होइत अछि जे भोजनोत्तर जाइ।

धातु रूपावली

धातुक मौलिक विकार

बाजब, हँसब, चलब, ऐब, जैब, देखब

ई सब क्रियाक साधारण रूप थीक। एकरा सबकें संज्ञो जकाँ व्यवहार कै सकैत छी, यथा हुनक बाजब हमरा बड़ नीक लागल। ओ देखबा मे बड़ सुन्दर छथि। हम ऐबालै तैयार छी आदि। एहि स्थिति मे ई *क्रियार्थक संज्ञा* कहल जाइछ। एहि मे सँ 'ब' कें हटाय जे शेष रहैछ, हसै थीक क्रियाक धातु। क्रियाक जतेक रूप होइछ ताहि सबमें धातु विद्यमान रहैछ।

बाजि, बाजी, बाजब, बाजत, बाजल, बजैत, बजने

कोनो धातुक यैह छौ गोट विकृत रूप होइछ। एकरा धातुक मौलिक विकार कहल जाइछ। ऊपर क रूप सँ ई निश्चय होइछ जे धातुक अन्त्याक्षर कें ह्रस्व इकार वा ऐकार कैने पूर्वकालिक क्रियाक रूप बनैछ। दीर्घ ईकार कैने आशीर्लिङ्ग रूप धातु मे 'त' अथवा 'ब' लगौने सामान्य भविष्यत् कालक रूप, 'इत' वा 'एत' लगौने वर्त्तमानकालिक कृदन्त, 'ल' लगौने सामान्य भूत वा भूतकालिक कृदन्त तथा 'ने' जोड़ने सार्वकालिक कृदन्त रूप होइछ। नीचाँक वृक्ष एकरा अधिक स्पष्ट करत।

धातु-विकार-वृक्ष

देखैत (सार्वकालिक कृदन्त)

देखइत वा देखैत (वर्तमानकालिक कृदन्त)

देखल (भूतकालिक कृदन्त वा सामान्यभूत काल)

देखब / देखत (सामान्य भविष्यत काल)

देखी (कामना वा आशीर्लिङ्)

देखि (पूर्वकालिक क्रिया)

'देख धातु'

एहिमे सँ पूर्वकालिक क्रियाक रूप सर्वत्र अविकृत रहैछ। तहिना सार्वकालिक कृदन्तक रूप धातु रूपावलीमे अविकृते रहैछ। धातु रूपावली मे वर्त्तमानकालिक कृदन्तो अविकृते रहैछ। एहि तीनूमे सहायका क्रिया लगाय भिन्न-भिन्न काल ओ भावक धातु रूपावलीक निर्माण होइछ एवं सहायिका क्रियहिमे वर्गविकारक प्रत्यय लगैछ किन्तु शेष तीनटा मौलिक

रूप स्वयं भिन्न-भिन्न कालक रूप थीक। तें एहि सब कालक रूपावली बनैबामे वर्ग-विकारक प्रत्ययो एही मे लगैछ। जेना देखलहुँ, देखलिअहु, देखलिऐन्हि आदि। किन्तु देखि रहल छी, देखने रही, देखैत छलहुँ आदि मे ई सब प्रत्यय अन्तिम सहायिका क्रिया सब मे लागत। यथा—देखि रहलछी, देखि रहल छिअहु, देखि रहल छिऐन्ह इत्यादि; देखने रही, देखने रहिऐन्हि, देखने रहिअहु इत्यादि।

धातु रूपावलीक निर्माण मे धातुक एहि छओ विकृत रूपकें स्मरण राखब अनिवार्य अछि। कतोक धातुक ई छओ रूप किछु भिन्न-भिन्न होइछ। तें नीचाँ किछु धातुक छओ विकारक तालिका देल जाइछ—

धातुक विकार-चक्र

धातु	पूर्वकालिक रूप	आशीर्लिङ्ग	सामान्य भवि०	भू० का० कृदन्त	वर्त्त० काल० कृदन्त	सार्व-का० कृदन्त
कर	कै	करी	करब	कैल	करैत	कैने
चल	चलि	चली	चलब	चलत	चलैत	चलने
आ	आबि	आबी	ऐब	ऐल	अबैत	ऐने
जा	जाय	जाइ	जैब	गेल	जाइत	गेने
नहा	नहाय	नहाइ	नहैब	नहैल	नहाइत	नहैने
करा	कराय	कराबी	करैब	करौल	करबइत	करबौने
मुकिआ	मुकिआय	मुकिआबी	मुकिऐब	मुकिऔल	मुकिआबैत	मुकिऔने
जी	जीबि	जीवी	जीब	जील	जीबैत	जीने
चू	चूबि	चूबी	चूब	चूबल	चूबैत	चूने
दे	दै	दी	देब	देल	दैत	देने
हो	भै	होइ	होएब, हैब	भेल	होइत	भेने
धो	धोए	धोइ	धोऐब	धोऐल	धोइत	धोऐने

टि० [वर्त्तमान कालिक कृदन्तक 'इत' प्रत्ययक प्रायः सर्वत्र 'ऐत' भै जाइछ एवं तकरे अधिक व्यवहार अछि यथा--करैत, चलैत, जीवैत इत्यादि। आशीर्लिङ्ग, सामान्य भविष्यत् ओ भूतकालिक कृदन्द वा सामान्य भूतक रूप केवल उत्तम पुरुष मे देखौल गेल अछि। आन-आन पुरुषक रूप वर्ग भेदक नियमानुसार बनैबाक चाही। देखू आगाँ वर्ग-विकार]

वर्ग-विकार

देखब, देखबैन्हि, देखबहु, देखत, देखताह, देखथिन्ह

एहि सँ बूझि पड़ैछ जे कोनो कालक रूप कर्त्ता एवं कर्मादि कारकक पुरुष तथा व्यक्तित्वक अनुसार बदलैछ।

कर्त्ताक पुरुष ओ व्यक्तित्वक अनुसार एहिमे 'देखब' क भिन्न-भिन्न रूप बनल। राजा सीता कें देखलथिन्ह, नोकर सब सीता कें देखलकैन्हि, हम देखलहुँ, अहाँ देखलहुँ, तोँ देखलहुन्ह, ओ देखलथिन्ह, ओ (कोनो साधारण व्यक्ति) देखलकैन्हि इत्यादि।

ई परिवर्त्तन केवल कर्त्ताहिक वचन ओ व्यक्तित्वक क्रमे नहि होइछ, कोनो दोसरो कारकक सम्पर्क भेल की ओकर पुरुष ओ व्यक्तित्व क्रियाक रूप कें प्रभावित करैछ, यथा—हम हुनका वा अहाँक संग जाइत छी, ओकरा संग जाइत छिऐक, तोहरा संग जाइत छिअहु, तोरा संग जाइत छिऔक, ओ हमरा संग जाइत

छथि, ओ हमरा संग जाइत अछि, ओ तोहरा संग जाइत छथुन्ह, ओ हुनका संग जाइत छथिन्ह, ओ ओकरा संग जाइत छैक इत्यादि। तें हेतु केवल क्रियाक रूप देखला सँ कर्त्ता, कर्म तथा ओकर पुरुष ओ व्यक्तित्व आदिक ज्ञान मैथिली मे भै जाइछ। एहि प्रकारें कोनो क्रियाक एक-एक काल मे १८ गोट रूप होइछ। ई वर्ग-विकारक प्रत्यय लगौला सँ बनैछ। क्रिया सकर्मक रहौ अथवा अकर्मक, दशो निश्चयात्मक ओ दशो अनिश्चयात्मक कालक दूनू वाच्यक रूप मे ई अठारहो प्रत्यय लगैछ। तें हेतु कोनो धातुक (१०+१०) २×१८=७२० रूप बनैछ। एकर अतिरिक्त आशीर्लिङ्ग ओ विधि रूप अछि। एहि सब मे धातु अचल रहैछ किन्तु वर्ग-विकारक प्रत्यय धातुक मौलिक विकार अथवा ओकरा आगाँ जे साहायिका क्रिया अबैछ, तकरा अन्त मे लगैछ। 'पुरुषक' निम्नलिखित १८ वर्ग-भेद मैथिली मे पौल जाइछ। उदाहरण सामान्य भूतक देल जाइछ—

वर्ग भेद

कर्त्ता	कर्मादि सम्पर्की कारक
(१) हम वा अहाँ (उत्तम पुरुष वा मध्यम पु॰ आदर सूचक)	(१) अहाँकें, अहाँसँ, अहाँलै, अहाँक हमरा, हमरासँ, हमरालै, हमर आदि देलहुँ, लेलहुँ, भेलहुँ, इत्यादि

कर्त्ता	कर्मादि सम्पर्की कारक
हम (उ० पु०)	(२) तोहरा, तोहरासँ······ तोहर आदि (म० पु० सामान्य) देलिअहु, लेलिअहु,······ भेलिअहु···
हम,,	(३) तोरा, तोरासँ···तोहर आदि (म० पु० आदराभाव) देलिऔ, लेलिऔ,···भेलिऔ····
हम वा अहाँ (उ० पु० वा म० पु० आदर सू०)	(४) हुनका, हिनका, जिनका आदि अन्य पु० आदर सूचकक कोनोकारक देलिऐन्हि, लेलिऐन्हि, भेलिऐन्हि····
,,	(५) ओकरा, एकरा आदि अन्य पु० आदराभावक कोनो कारक देलियै (क), लेलिऐक (क), भेलियै (क)···
(२) तों (म०पु० सामान्य)	(६)हमरा (उ०पु० कोनो कारक) देलह, लेलह, भेलह········· (७ हुनका, हिनका आदि (अ० पु० आदर-सूचक कोनो कारक) देलहुन, लेलहुन, भेलहुन········· (८)ओकरा. एकर आदि (अ० पु० आदराभावक, कोनो कारक) देलहक, लेलहक, भेलहक··· ·····

(९) हमरा, हमर इत्यादि (उ० पु०)

(३) तों (म० पु०)

आदराभाव

देलें लेलें, भेलें ....

(१०) ओकरा, एकरा आदि (अ० पु० आदराभाव)

देलही, लेलही, भेलही ....

(४) ओ, ई, जे, से आदि (अन्य पु० आदर सूचक)

(११) हमरा वा अहाँकेँ आदि (उ० पु० वा म० पु० आदर)

देलैन्हि, लेलैन्हि, भेलाह आदि

(१२) तोहरा वा तोरा, तोहरासँ वा तोरा सँ आदि

(म० पु० सामान्य वा आदराभाव)

देलथुन्ह, लेलथुन्ह, भेलथुन्ह आदि

(१३) हुनका, ओकरा, हुनकासँ, ओकरासँ आदि

(अ० पु० आदर वा आदराभाव)

देलथिन्ह, लेलथिन्ह, भेलथिन्ह आदि

(५) ओ, ई, जे, से आदि अन्यपुरुष आदराभाव

(१४) हमरा, अहाँकें, हमरासँ, अहाँसँ (आदि उ० पु० वा म० पु० आदर)

देलक, लेलक, भेल आदि

(१५) तोहरा, तोहरासँ (म० पु०
सामान्य)
देलकहु, लेलकहु, भेलहु आदि
(१६) तोरा, तोरासँ, तोराले,
तोहर आदि
(म० पु० आदराभाव)
देलकौ, लेलकौ, भेलौ आदि
(१७) हुनका, हिनका, हुनकासँ
हिनकासँ
(अन्य पुरुष आदर सूचक)
देलकैन्हि, लेलकैन्हि, भेलैन्हि
(१८) ओकरा, एकरा, ओकरा सँ
एकरासँ
(अ० पु० आदराभाव)
देलकै (क), लेलकै (क), भेलै (क)

सहायिका क्रिया

राम आबि रहल अछि, पत्र लिखल जाय रहल अछि,
श्याम खाइत हैताह

उपरक तीनू वाक्य मे रेखाङ्कित शब्द क्रिया थीक। पहि

सब मे मुख्य क्रिया अछि—ऐब, लिखब तथा खैब मुदा प्रथम ओ दोसर वाक्य मे 'रह' एवं 'अछि' तथा तेसर मे 'हो' धातुक सहायता लेल गेल अछि तखन ओहि सब काल मे मुख्य क्रियाक रूप बनल। एहि सब मे सहायिका क्रिया रहब, हैब आदिक अपन अर्थ किछु नहि अछि। तें जे क्रिया अपना अर्थक त्याग कै मुख्य क्रियाक रूपावली बनैबा मे सहायता करै से थीक *सहायिका क्रिया*। मैथिली मे केवल तीनटा सहायिका क्रिया अछि—हो, रह, जा। एहू तीनमे 'जा' क सहायता केवल कर्मवाच्यक रूप बनैबा मे लेल जाइछ परन्तु ई प्रायः मुख्य क्रिया तथा दोसर सहायिका क्रियाक बीच मे अबैछ। तें एहि मे वर्ग-विकारक प्रत्यय प्रायः नहिए लगैछ। होएब तथा रहब एही दूनू मे ओ सब प्रत्यय लगैछ। आब 'हो' धातुक अछि, छल, होइत, होइ, होएब तथा 'रह' धातुक रही एवं रहब यैह सात गोट रूप सहायिका रूपें क्रियाक कोनो कालक रूपावलीक अन्त मे अबैछ। तें एहि सब मे वर्ग विकारक प्रत्यय लगैछ एवं ताहि सँ भिन्न-भिन्न कालक धातु रूपावलीक निर्माण होइछ। जें हेतुएँ यहि कार्य मे एहि सातो रूपक अठारहो वर्गक रूपावलीक प्रयोजन बरोबरि होइछ अतः नीचाँ एकर एकटा चक्र देल जाइछ—

—:०:—

सहायिका क्रिया मे प्रयुक्त
वर्गचक्र

वर्ग भेदक क्रमांक	अछि	छल	होइ	होइत	होएब	रह	रहब
१	छी	छलहुँ	होइ	होइतहुँ	हैब	रही	रहब
२	छिअहु	छलिअहु	होइअहु	होइतिअहु	हैबहु	रहिअहु	रहबहु
३	छिऔ(क)	छलिऔ(क)	होइऔ(क)	होइतिऔ(क)	हैबौ(क)	रहिऔ(क)	रहबौ(क)
४	छिऐन्हि	छलिऐन्हि	होइऐन्हि	होइतिऐन्हि	हैबैन्हि	रहिऐन्हि	रहबैन्हि
५	छिऐक	छलिऐक	होइऐक	होइतिऐक	हैबैक	रहिऐक	रहबैक
६	छह	छलह	होअह	होइतह	हैबह	रहह	रहबह
७	छहुन	छलहुन	होहुन	होइतहुन	हैबहुन	रहुन	रहबहुन
८	छहक	छलहक	होहक	होइतहक	हैबहक	रहक	रहबहक
९	छें	छलें	हो इ	होइतें	हैबें	रहें	रहबें

वर्ग भेदक क्रमांक	अछि	छल	होइ	होइत	हैब	रह	रहब
१०	छही	छलही	होही	होइतही	हैबही	रहही	रहबही
११	छथि	छलाह	होथि	होइतथि	हैताह	रहथि	रहताह
१२	छथुन्ह	छलथुन्ह	होथुन्ह	होइतथुन्ह	हैथुन्ह	रहथुन्ह	रहथुन्ह
१३	छथिन्ह	छलथिन्ह	होथिन्ह	होइतथिन्ह	हैथिन्ह	रहथिन्ह	रहथिन्ह
१४	अछि	छल	होए	होइत	हैत	रहय	रहत
१५	छहु	छकहु	होउ	होइतहु	हैतहु	रहहु	रहतहु
१६	छौ(क)	छलौ(क)	होउ(क)	होइतौ(क)	हैतौ(क)	रहौ(क)	रहतौ(क)
१७	छैन्हि	छलैन्हि	होइन्ह	होइतैन्हि	हैतैन्हि	रहैन्हि	रहतैन्हि
१८	छैक	छलैक	होइक	होइतैक	हैतैक	रहैक	रहतैक

टि०—तेसर, पांचम, आठम, सोलहम एवं अठारहम वर्गक अंतिम 'क' क व्यवहार विकल्प सँ होइछ अर्थात् बहुधा नहियो होइछ।



'खा' धातुक रूपावलीक उदाहरण

सामान्य वा अपूर्ण वर्त्तमान काल

(१) हम वा अहाँ (अहाँक वा हमर) भात खाइ (त) छी।

(२) हम (तोहर) भात खाइ (त) छिअहु।

(३) हम (तोहर) भात खाइ (त) छिऔ (क)।

(४) हम वा अहाँ (हुनक) भात खाइ (त) छिऐन्हि।

(५) ,, ,, (ओकर) भात खाइ (त) छिऐक।

(६) तों (हमर) भात खाइ (त) छह।

(७) तों (हुनक) भात खाइ (त) छहुन्ह।

(८) तों (ओकर) भात खाइ (त) छहक।

(९) तों (हमर) भात खाइ (त) छें।

(१०) तों ओकर भात खाइ (त) छही।

(११) ओ, ई इत्यादि (अ० पु० आदर सूचक) हमर वा अहाँक भात खाइ (त) छथि।

(१२) ,, ,, तोहर भात खाइ (त) छथुन्ह।

(१३) ,, ,, हुनक वा ओकर भात खाइ (त) छथिन्ह।

(१४) ओ, ई इत्यादि (अ० पु० आदराभव) हमर वा अहाँक भात खाइ (त) अछि वा खाइछ।

(१५) ओ, ई ,, तोहर भात खाइ (त) छहु।

(१६) ,, ,, ,, तोहर भात खाइ (त) छौ (क)।

(१७) ,, ,, ,, हुनक भात खाइ (त) छैन्हि।

(१८) ,, ,, ,, ओकर भात खाइ (त) छैक।

ऊपर जे रूपावली देल गेल अछि से अपूर्ण वर्तमान कालक रूप थीक। एहि सँ ई निश्चय भेल जे कोनो कालक रूपक अन्तिम मुख्य वा सहायिका क्रिया मे अठारहो वर्गक प्रत्यय लगाय सम्पूर्ण रूपावली बनौल जाइ'छ। इहो प्रत्यक्ष होइ'छ जे मैथिलीक धातु रूपावली मे लिंग अथवा वचनक कोनो बखेड़ा नहि अछि, मुदा पुरुषक बखेड़ा अवश्य अधिक अछि। धातु सकर्मक रहौ वा अकर्मक ओकरा जखनहि भिन्न-भिन्न श्रेणीक पुरुषक संयोग भेलैक की क्रियाक रूपान्तर भेल।

पूर्व कथित कोनो कालक रूप हो, तकरा अन्तिम क्रिया (सहायिका वा मुख्य जे रहौ) मे वर्ग बिकारक प्रत्यय लगाय सम्पूर्ण रूपावली बनैवाक चाही। उदाहरणार्थ एक दू क्रियाक किछु रूपावली देल जाइछ—

'हो' धातु कर्तृवाच्य (अकर्मक)

निश्चयात्मक भाव

वर्तमान काल

सामान्य वा अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१) होइ (त) छी	भेल छी वा भेलहुँ अछि	भै रहल छी
(२) होइ (त) छिअहु	भेल छिअहु भेलिअहु अछि	भै रहल छिअहु

सामान्य वा अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(९) होइत छें	भेल छें भेलें अछि	भै रहल छें
(१४) होइत अछि वा होइ'छ	भेल अछि	भै रहल अछि

इत्यादि आन वर्गक रूप विकार-चक्र (पृ० ५९-६०) सँ बनाग्री।

टि० [पूर्ण वर्त्तमानक रूप मे वर्ग-विकारक प्रत्यय विकल्प सँ मुख्यो क्रिया में लगैछ। ताहि स्थिति मे सहायिका क्रिया सर्वत्र 'अछि' रहैछ। सामान्य वा अपूर्ण मे मुख्य क्रियाक 'त' विकल्प सँ लगैछ। तहिना ३, ५, ८, १६, एवं १८ संख्याक वर्ग विकारमे 'क' विकल्प सँ लगैछ।]

—०—

भूत काल

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१) भेलहुँ	होइत छलहुँ	भेल छलहुँ भेलहुँ छल	भै रहल छलहुँ
( ) भेलिअहु	होइत छलिअहु	भेल छलिअहु भेलिअहु छल	भै रहल छलिअहु
(३) भेलियौ (क)	होइत छलियौ (क)	भेल छलिओ(क) भेलिऔ(क) छल	भै रहल छलियौ(क)

(औ' क बाद सर्वत्र 'क' क आगम विकल्प सँ)

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(६) भेलह	होइत छलह	भेल छलह भेलह छल	भै रहल छलह

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(११) भेछाह	होइत छलाह	भेल छलाह	भै रहल छलाह
भेलीहि(स्त्री०)	छलीहि(स्त्री०)	छलीहि(स्त्री०)	छलीहि (स्त्री०)
(१५) भेलहु	होइत छलहु	भेल छलहु	भै रहल छलहु
		भेलहु छल	
(१८) भेलैक	होइत छलैक	भेज छलैक	भै रहल छलैक
		भेलैक छल	

टि० [जे वर्ग छूटल अछि तकर रूप वर्ग-चक्र देखि बनाय लेबाक चाही। पूर्ण भूत काल मे वर्ग विकारक प्रत्यय विकल्प सँ मुख्यो क्रिया मे लगैछ। ताहि स्थिति मे सहायिका क्रिया सर्वत्र 'छल' रहैछ। एगारहम वर्ग कें ध्यान मे राखब आवश्यक। एहि मे 'आह' कें स्त्रीलिङ्ग मे 'ईहि' होइत अछि। यैह एक दू रूप सँ मैथिली क्रियाक रूप मे स्त्रीलिंगक सूचना भेटैछ।]

—:o:—

भविष्यत् काल

सामान्य	पूर्ण	अपूर्ण
(१) हैव	भेल रहब	होइत रहब
(२) हैवैन्हि	भेल रहबैन्हि	होइत रहवैम्हि
(११) हैताह(तीहि स्त्री०)	भेल रहताह (तीहि)	होइत रहताह (तीहि)

सामान्य	पूर्ण	तात्कालिक
(१७) होएतहु, वा हैतहु	भेल रहतहु	होइत रहतहु
(१८) होएतैक वा हैतैक	भेल रहतैक	होइत रहतैक

[टि० शेष स्थानक पूर्त्ति वर्ग-चक्र सँ करब सहज अछि। स्मरण राखक चाही जे होएबाक दूनू रूप शुद्ध अछि।]

———

अनिश्चयात्मक भाव

वर्तमान काल

सामान्य वा अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१) होइत	भेल होइ	भै रहल होइ

[टि० तीनू कालक अन्तिम सहायिका 'होइ' थीक। आब एही मे अठारहो प्रकारक प्रत्यय जोड़ि सब पुरुषक रूप प्रत्येक काल मे बनैबाक चाही। मौलिक विकारक तीनू होइत, भेल, भै रहल क्रमशः तीनू काल मे अचल रहत।]

भूतकाल

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तत्कालिक
(१) होइतहुँ	होइत होएब वा रहितहुँ	भेल होएब वा रहितहुँ	भै रहल होएब
(६) होइतह	होइत होएबह वा रहितह	भेल होएबह वा रहबह	भै रहल होएबह

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१८) होइतैक	होइत होएतैक वा रहितैक	भेल होएतैक वा रहितैक	भै रहल होएतैक

टि० [शेष स्थानक पूर्त्ति सहज अछि। होएब वा होएत क विषय मे पूर्वक टिप्पणी स्मरण राखक चाही। 'क' क आगम वैकल्पिक अछि।]

भविष्यत् काल

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण
(१) होइ	होइत रही	भेल रही
(६) होअह	होइत रहह	भेल रहह
(११) होथि, होथु	होइत रहथि (थु)	भेल रहथि (थु)
(१४) हो	होइत रहै	भेल रहै

टि० [एहि मे तात्कालिक रूपक अभाव अछि। पूर्ण ओ अपूर्ण रूपक यैह रूप निश्चयात्मको भाव मे होइछ मुदा ओहिठाम एहि धातुक समस्त रूप 'छल' क निश्चित अर्थ दैछ परन्तु एहिठाम रही इत्यादि केवल सम्भावनाक सूचना दैछ ते स्वरूपतः एक होइतहुँ अर्थतः दूनू भिन्न थीक।]

प्रत्येक अकर्मक क्रियाक रूपावली एही प्रकारें भिन्न-भिन्न भाव ओ कालमे बनैछ।

कह धातु (सकर्मक)

(कर्तृवाच्य निश्चयात्मक भाव)

वर्त्तमान काल

	सामान्य वा अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१)	कहै (त) छी	कहने छी	कहि रहल छी

टि० [आब 'छी' क रूपान्तर सँ अठारहो पुरुषक रूप बनाए लिय। देखू पृष्ठ ५९-६० वर्गचक्र]

भूतकाल

	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१)	कहलहुँ	कहै (त) छलहुँ	कहने छलहुँ कहलहुँ छल	कहि रहल छलहुँ
(८)	कहलहक	कहैत छलहक	कहने छलहक कहलहक छल	कहि रहल छलहक
(११)	कहलैन्हि	कहैत छलाह	कहने छलाह	कहि रहल छलाह*
(१८)	कहलकै (क)	कहैत छलैक	कहने छलैक बा कहलकैक छल	कहि रहल छलैक

* स्त्रीलिंग में 'आह' के ˊ ईहि होइछ

टि० [शेष स्थानक पूर्त्ति सहज अछि। पूर्णभूत मे वर्ग विकारक प्रत्यय विकल्प सँ मुख्यो क्रियामे लगैछ।]

भविष्यत् काल

	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण
(१)	कहब	कहैत रहब	कहने रहब
(११)	कहताह	कहैत रहताह	कहने रहताह

टि० [शेष स्थानक पूर्त्ति वर्ग विकारक प्रत्यय सँ करब आसान अछि। कहब, रहब दूनू मे एके रंग ई सब प्रत्यय लागत। तात्कालिक रूपक अभाव अछि। एहूमे ११ म वर्गक स्त्रीलिंगक 'ईहि' प्रत्यय स्मरण राखक चाही।]

अनिश्चयात्मक भाव

वर्त्तमान काल

	सामान्य वा अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१)	कहैत होइ	कहने होइ	कहि रहल होइ

टि० [आब 'होइ' क भिन्न-भिन्न वर्ग रूप सँ सब पुरुषक रूप बनाय लिय [देखू वर्गचक्र पृष्ठ ५६-६०]

भूतकाल

	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१)	कहितहुँ	कहैत होएब	कहने होएब	कहि रहल होएब

टि० [आब 'होएब' वा 'हैब' क भिन्न-भिन्न रूप सँ सब पुरुषक रूप अनायास सम्पन्न हैत।]

भविष्यत् काल

	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण
(१)	कही	कहैत रही	कहने रही

टि॰ [कही तथा रही दूनूक वर्ग रूप सर्वत्र एके रंग हैत। 'कहैत रही' वा 'कहने रही' आदिक अर्थ जखन कहैत छलहुँ वा कहने छलहुँ आदि निश्चयात्मक भै जाइ'छ तखन ई निश्चयात्मक भावक अपूर्ण एवं पूर्ण भूत बनि जाइछ। स्पष्ट अछि जे स्वरुपतः एक होइतहु ओ अर्थतः एहिसँ भिन्न अछि।]

कर्मवाच्य रूपक नियम

एकर नियम बड़ सरल अछि। जाहि धातुक कर्मवाच्य रूप बनैबाक हो तकर पहिने सर्वत्र भूतकालिक कृदन्त राखी, तखन 'जा' धातुक रूप भिन्न-भिन्न वर्गक क्रमे जोड़ैत जाइ। ताही सँ कर्मवाच्यक रूप पूर्ण भै जाइछ।

कर्मवाच्य

निश्चयात्मक भाव

वर्त्तमान काल

सामान्य ओ अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१) कहल जाइत छी	कहल गेल छी	कहल जाय रहल छी

टि॰ [अन्यान्य स्थानमे केवल 'छी' क रूपान्तर करैत जाउ।]

भूतकाल

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१) कहल गेलहुँ	कहल जाइत छलहुं	कहल गेल छलहुँ	कहल जाय रहल छलहुँ

टि॰ [सर्वत्र 'छलहुँ' (केवल सामान्यमे 'गेलहुँ') क रूपान्तर हैत मुदा दूनूक एके रंग रूप चलत। देखू वर्ग चक्र।]

भविष्यत् काल

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण
(१) कहल जाएब	कहल जाइत रहब	कहल गेल रहब

टि० [जाएब तथा रहब दूनूक वर्ग-बिकार आगाँ एके रंग चलत। जाएबक संक्षिप्त रूप जैबहु सँ काज चलैछ। 'जाएब' क संक्षिप्त रूप 'जैब' अधिक व्यवहृत होइछ, तहिना ऐब, रहैब आदि।]

अनिश्चयात्मक भाव

वर्त्तमान काल

सामान्य वा अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१) कहल जाइत होइ	कहल गेल होइ	कहल जाए रहल होइ

टि० [आगाँ केबल 'होइ' क वर्ग-भेद देखू।]

भूतकाल

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	तात्कालिक
(१) कहल जैतहुँ	कहल जाइत हैब वा रहितहुँ	कहल गेल हैब वा रहितहूँ	कहल जाए रहल हैब

टि० (शेष स्थान में 'होएब' 'होइत' तथा 'रहब' क रूपान्तर सँ काज चलत। देखू पृ० ५६-६०]

भविष्यत् काल

सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण
(१) कहल जाइ	कहल जाइत रही	कहल गेल रही

टि० (भविष्यत् में तात्कालिक रूप नहि होइछ। वर्ग चक्रसँ शेष स्थानक पूर्ति हैत। सूत, चल, हँस आदि अकर्मक क्रियाहुक भावावाच्य रूप कर्मवाच्यहिक सदृश होइछ, मुदा भावबाच्यक प्रयोग अधिकतः अशक्यता बोधन में होइछ। साधारण रूपें नहि। भविष्यत कालक अपूर्ण एवं पूर्णरूपक सम्बन्ध में पूर्वक टिप्पणी लागू अछि। (देखू पृ० ६६ एवं ६६)

आशीर्लिङ्ग रूप

अकारान्त 'कर' धातु

(१) करी (२) करिअहु (३) करिऔ (क) (४) करिऐन्हि आदि 'रही' क वर्ग-विकारक अनुसार चलत। [देखू 'वर्ग चक्र'] प्रत्येक अकारान्त धातुक रूप एही प्रकारें हैत।

आकारान्त 'आ' धातु

(१) आबी (२) अबिअहु (३) अबिऔ (क) (४) अबिऐन्हि आदि (देखू वर्ग चक्र) गा, पा, ला, बा, करा आदि आकारान्त धातुक रूप एकरे सदृश होइछ।

आकारान्त 'जा' धातु

(१) जाइ (२) जैअहु (३) जैऔ (क) जैअन्हि आदि। खा, नहा, पढ़ा आदिक रूप एहिना होइछ।

ईकारान्त 'जी' धातु

(१) जीबी (२) जिविअहु (३) जिविऔ (क) (१०) जिबही आदि ईकारान्त धातुक रूप एही प्रकारें चलैछ।

एकारान्त 'दे' धातु

(१) दी (२) दिअहु (३) दिओ (क) आदि प्रत्येक एकारान्त धातुक रूप पहिना होइछ।

ओकारान्त 'हो' धातु

(१) होइ (२) होइअहु (३) होइओ 'क' आदि। 'धो' आदि सब ओकारान्त धातुक रूप 'हो' धातुक सदृश होइछ।

अनुज्ञाभाव अथवा विधि क्रिया

जाहि क्रिया सँ आज्ञा, प्रार्थना, अनुरोध आदि सूचित हो तकरा अनुज्ञा वा विधि कहल जाइछ, से पहिने लिखि आएल छी। तेँ ई क्रिया केवल मध्यमें पुरुषक हेतु प्रयुक्त होइछ। आन व्यक्तिक प्रति जे प्रार्थना वा अनुरोध होइछ, से कामना वा इच्छात्मके होइछ तेँ ओ आशीर्लिङ्ग रूपक होइछ।

[१] अपने आएल जाओ वा लेल जाओ।—अत्यादर
[२] अहाँ आउ वा लिअ—आदर
[३] तों आवह वा लैह—सामान्य
[४] तों आ अथवा ले—आदराभाव
[१] अपने आएल जेतैक, लेल जेतैक।
[२] अहाँ नीक जकाँ रहब वा एहि नेना पर कृपा रखने रहबैक।

[३] तों ई काज करिहह ।
[४] तों एना करिहें ।

ऊपर दू प्रकारक चारि-चारि गोट उदाहरण देल गेल अछि। पहिल चारि सँ बुझना जाइछ जे कहनिहार व्यक्ति सुननिहार कें ओ काज प्रत्यक्ष वा अपना समक्ष करै कहै छैक मुदा दोसर चारू वाक्य सँ सूचित होइछ जे ओ काज अपना दृष्टि पर नहिं, परोक्ष में करबाक प्रार्थना वा अनुरोध करैछ। तें विधि क्रिया दू प्रकारक अछि, प्रत्यक्ष विधि एवं परोक्ष विधि। किन्तु दूनू प्रकार मे ई क्रिया क्रमशः अत्यादर, आदर, सामान्य ओ आदराभावक कारणें चारि-चारि भेदक होइछ। एकरो रूप कर्त्ता, एवं सम्पर्की पुरुषक आदरादि भावक क्रमे भिन्न-भिन्न होइछ।

टि०—'गऽ' लगौने मैथिली मे दोसर प्रकारक परोक्ष क्रिया बनैछ, यथा—करी गऽ, करब गऽ, देखू गऽ, इत्यादि।

रूपावली

प्रत्यक्ष विधि

त्यादर

अपने हमरा कहल जाओ वा हमरा ओहि ठाम ऐल जाओ।

अपने हुनका कहल जेतैन्ह वा हुनका ओतै ऐल जेतैन्ह।

अपने ओकरा कहल जेतैक वा ओकरा ओतै गेल जेतैक।

आदर	अहाँ हमरा कहू वा हमरा ओतै आउ। अहाँ हुनका कहिऔन्ह वा हुनका ओ अबिऔन्ह। अहाँ ओकरा कहिऔक वा ओकरा ओतै अबिऔक।

टि० (साधारणो रूपावली सँ बूझि पड़ैछ जे मैथिली भाषा मे आदरादिक क्रम कतेक मौलिक अछि। तेँ हेतु अनुज्ञामे और अधिक नम्रताक समावेश अछि। स्त्री समाज एहिमे नम्रताकेँ और पराकाष्ठा धरि पहुँचाय देने छथि। अपना सासु वा ससुर कें (कोनो गुरु जन रहथु) ओ समक्ष रूपेँ कोनो कथा नहि कहथीन्ह, तँ एहि अपने वा अहाँक स्थानमे ओ क्रमशः अन्य पुरुष 'ई' क व्यवहार करैत छथि। यथा--ई हमरा कहथु वा हमरा लग आबथु। ई हुनका कहथुन्ह वा हुनका लग अबथुन्ह बा जाथुन्ह। ई ओकरा कहथुन्ह बा ओकरा लग अबथुन्ह आदि।

सामान्य	तोँ हमरा कहह वा हमरा ओतै आबह। तोँ हुनका कहुन्ह वा हुनका ओतै अबहुन। तोँ ओकरा कहक वा ओकरा ओतै आबहक।
आदराभाव	तोँ हमरा कह वा हमरा ओतै आ। तोँ हुनका कहुन्ह वा हुनका ओतै अबहुन्ह वा जाहुन्ह। तोँ ओकरा कही वा ओकरा ओतै अबही, वा जाही।

परोक्ष विधि

अत्यादर

अपने हमारा कहल जेतैक वा हमरा ओतै ऐल जेतै।

अपने हुनका कहल जान्हि वा हुनका ओतै ऐल वा गेल जान्हि।

अपने ओकरा कहल जाय वा ओकरा ओतै गेल जाय।

आदर

अहाँ हमरा कहब वा कहब गऽवा हमरा ओतै ऐब, ऐब गऽ।

अहाँ हुनका कहबैन्हि वा कहबैन्हि गऽ वा हुनका ओतै जैबैन्हि गऽ।

अहाँ ओकरा कहबैक वा कहबैक गऽवा ओकरा ओतै जैबैक गऽ।

टि० [स्त्रीगण एकरा स्थानमे व्यवहार करैत छथि—ई हमरा कहती (ता) पुरुषक हेतु (गऽ वा हमरा लग औती (ता) गऽ।]

ई हुनका कहथिन्ह गऽवा हुनका लग औथिन्ह गऽ

ई ओकरा कहथुन्ह गऽ वा ओकरा लग औथिन्ह गऽ।]

सामान्य

तों हमरा कहिह गऽ वा हमरा ओतै अबिहह गऽ।

तों हुनका कहिहौन गऽ वा हुनका ओतै जैहौन गऽ।

तों ओकरा कहिहक गऽ वा ओकरा ओतै जैहक गऽ।

आदराभाव	तों हमरा कहिहें वा हमरा ओतै अबिहें तों हुनका कहिहौन्ह वा हुनका ओतै जैहौन वा जैहौन गऽ तोँ ओकरा कहिहैक वा ओकरा ओतै जैहैक वा जैहैक गऽ

पूर्वकालिक क्रिया

आइ हम खाय कै स्कूल नहि गेलहुँ, आबि कै खैलहुँ।

एहि सँ ई निश्चय भेल जे धातु मे य वा इकारक आगम होइछ, तखन साधारणतः पूर्वकालिक क्रिया बनैछ, यथा--कहि, सुनि, पकड़ि आदि मुदा कर सँ कै, खा सँ खाय, ला सँ लावि वा आनि आदि भिन्नो रूप होइछ। तेँ धातुक मौलिक विकार मे प्रायः सब प्रकारक क्रियाक पूर्वकालिक रूप देखौल गेल अछि। ओहि मे बहुधा 'कै' जोड़ि पूर्वकालिक क्रिया बनैछ। एकरा पूर्वकालिक एहि कारणे कहल जाइछ जे कर्त्ता जखन कतोक क्रिया करैछ तखन जे पहिने होइ छैक से पूर्वकालिक एवं अन्त मे जे भेल से मुख्य वा समापिका क्रिया भेल। उपर्युक्त वाक्य म 'खैब' तथा 'जैब' और 'ऐब' तथा 'खैब' एके व्यक्तिक क्रिया थिकैक मुदा एक वाक्यमे 'खैब' पहिने, दोसर मे 'ऐब' पहिने होइ छैक तें एकरा पूर्वकालिक क्रिया

कहल जाइछ। एकर व्यवहार अव्यये जकाँ होइछ अर्थात्
सब पुरुषक हेतु एकरू रूप एके रंग रहैछ।

संयुक्त क्रिया

दै देब, देखिपड़ब, करै लागब, चलि सकब, चल ऐब

एहि सब क्रिया मे दू-दू क्रियाक सयोग अछि मुदा पछिला क्रियाक अर्थक प्रधानता नहि छैक, पहिले क्रियाक अर्थ प्रधान छैक। एहि प्रकार क्रियाकेँ सयुक्त क्रिया कहल जाईछ। ई कतेको प्रकारक होइछ, यथा—

आम पाकै लागल—आरम्भ बोधक।
हम ई काज कै लेलहुँ—समाप्ति बोधक।

टाका खसि पड़ल
ओ बाजि उठलाह } आकस्मिकता बोधक।
ओकरा मारि बैसलैक

हम एतेक दूर पैदल चलि सकैत छी—शक्ति बोधक।
ई काज हमरा स्वयं देखै पड़त—विवशता बोधक।

यदि हुनका देखि पाबी……
यदि ओ जाय देथि…… } अवकाश बोधक।

देखल करब, जाइत रहब आदि—वीप्सा बोधक।
करै चाहब आदि—इच्छा बोधक।

अबैत जाउ, जाइत जाउ, खाइत जाउ—अनेकार्थक।

टि०–[ई यथार्थ मे बहुबचन रूप थीक। जाउ, आउ तथा खाउ क्रियाक।]

यौगिक क्रिया

बाजब-भूकब, लिखब-पढ़ब, देखव-सुनब

एहि प्रकारक क्रियामे दूनू धातुक अर्थ विद्यमान रहैत छैक। एकरे नाम यौगिक क्रिया थीक। रूपावली बनैबाक हो तँ दूनूक रूपावली संगहि चलत यथा—किछु लिखल-पढ़ल छहु की मूर्खे छह ? देखि-सुनि कै काज करह।

प्रेरणार्थक क्रिया

(१) बालक सुतैत अछि (२) माता बालक कें सुतबैत छथि (३) माता दासी सँ बालक कें सुतबबैत छथि। (४) जन सब काज करैछ। (५) ओ जन सब सँ काज करबैत छथि। (६) ओ हुनका द्वारा जन सभ सँ काज करबबैत अछि।

उपर छौ गोट वाक्य देल गेल अछि। प्रथम वाक्यक क्रिया 'सूतब' अकर्मक थीक। दोसर वाक्यक क्रिया तकरे सकर्मक वा प्रेरणार्थक "सुतैब" थीक एवं तेसर वाक्यक क्रिया 'सुतवैब' सकर्मकक क्रमे प्रथम प्रेरणार्थक किन्तु मूल अकर्मक क्रियाक क्रमे द्विप्रेरणार्थक भेल। अन्तिम तीनू वाक्यक क्रिया

सकर्मक अछि। चारिम वाक्यमे 'करब' सकर्मक, पांचमक 'करैब' प्रेरणार्थक एवं छठम वाक्यक 'करबैब' द्विप्रेरणार्थक भेल। एहि सँ निश्चय भेल जे मूल क्रिया मे 'ऐब' लगाय सकर्मक वा प्रेरणार्थक बनौल जाइछ तथा 'बैब' लगाय प्रेरणार्थक वा द्विप्रेरणार्थक क्रिया बनौल जाइछ। नीचाँ किछु क्रियाक प्रेरणार्थक रूप देल जाइछ—

अकर्मक क्रिया	*सकर्मक*	*प्रेरणार्थक*
सूतब	सुतैब	सुतबैब
जागब	जगैब	जगबैब
हँसब	हँसैब	हँसबैब
लागब	लगैब	लगबैब
ऐब	आनब, मङ्गैब	अनबैब, मङ्गबैब
जैब	पठैब	पठबैब
चलब	चलैब	चलबैब
उठब	उठैब	उठबैब
कटब	काटब	कटबैब
मरब	मारब	मरबैब

सकर्मक	*प्रेरणार्थक*	*द्विप्रेर०*
करब	करैब	करबैब
गैब	गबैब	गबबैब
देखब	देखैब	देखबैब
लेब	लऐब	लियबैब
देब	दियैब	दियबैब
लाएब(आनब)	मङ्गैब	मङ्गबैब

सुनब	सुनैब	सुनबैब
कहब	कहैब	कहबैब

नाम धातु

जुतिऐब, लठिऐब, चुनेटब, मटिऐब

एहि सब क्रियाकेँ देखने ई स्पष्ट होइछ जे ई सब कोनो संज्ञा वा नाम सँ उत्पन्न भेल अछि, तेँ एकरा सब केँ 'नाम धातु' कहल जाइछ। मैथिली मे एहन धातु बहुत अछि। नाम तथा विशेषण आदि पद मे 'ऐब' लगाय साधारणतः ई बनैछ एवं उपधा दीर्घ स्वर क ह्रस्व होइत छैक। धातु बनि गेला पर रूपान्तर साधारणे क्रिया जकाँ होइत छैक। एहिठाम किछु नाम धातुक तालिका देल जाइछ—

माँटि—मटिऐब, पानि—पनिऐब, चौकी—चौकिऐब, आँटी—अँटिऐब, लाठी—लठिऐब, थापर—थपरैब, चिक्कन—चिक्कनैब, पातर—पतरैब, बाहर—बहरैब।

किछु अनियमितो होइछ—

कान—कनेठब, गुन—गुनेठब, चुन—चुनेटब, खुट्टा—खुटेसब, आगि—अगिआसब, लत्ती—लतरब, नमहर—नमरब,

किछु बिना प्रत्ययहु होइछ

बास—बासब, रंग—रंगब, बात—बातब, गमक—गमकब

क्रियाद्योतक

मरैत पड़ैत ऐल छी।

पड़ल पड़ल देखैत छी।

हमर हाथ पकड़ने चलू, चललाह वा चलताह।

उपरक उदाहरण मे रेखांकित क्रिया असमापिका थीक किन्तु ऐल छी, देखैत छी, चलू आदि समापिका थीक। असमापिका क्रियाक तीन भेद देखि पड़ैछ-(१) वर्त्तमान कालिक (२) भूतकालिक (३) सार्वकालिक। एहि तीनूक नाम क्रियाद्योतक थीक। कारण जे ई सब समापिका क्रियाक अर्थ द्योतित (प्रकाशित) करैछ और कृदन्त एहि कारणे कहबैछ जे ई सब विशेषणहुक रूपें व्यवहृत भै संज्ञाक अर्थ द्योतित करैछ, यथा—खाइत काल, जरैत घर, भेल मानस, सुतली राति, देखल वस्तु, मुइल माछ, भरल घैल इत्यादि।

एहि तीनू कृदन्तक की रूप अछि, समापिका क्रिया बनैबामे एकर की प्रजोजन पड़ैछ, से सब पहिनहि लिखि ऐल छी। एहिठाम एकर भिन्न-भिन्न प्रयोगक किछु उदाहरण दैत छी।

मरैत मरैत बचल छी—पराकाष्ठा बोधक

कहैत कहैत थेथर भेलहु-पौनः पुन्यार्थ मे

जाइत जाइत रामपुर पहुँचलहुँ—निरन्तरता बोधक

उठैत बैसैत चल जैब—सातत्यक सूचना मे

पड़ल-पड़ल देखैत छी— ,, ,,

गेल गेल बिहनसर भै गेल–अतिकालक अर्थ मे

रखने-रखने हाथ दुखा गेल वा भूठ भै गेल–"

टि० [सार्वकालिक कृदन्तक व्यवहार संज्ञाक विशेषण रूपेँ नहि होइछ मुदा ई रूप क्रियार्थक संज्ञाक रूपेँ खूब व्यवहृत होइछ।]

प्रश्न

(१) धातुक मौलिक विकार सँ की बुझै छी, ई कै प्रकारक अछि।

(२) धर, चल, ले, जी, धातुक मौलिक विकार लिखू।

(३) वर्ग-विकार ककरा कहल जाइछ, ई कै गोट होइछ ?

(४) 'हो' धातुक जतेक मौलिक विकार अछि, तकरा सभक-वर्ग–विकार लिखू।

(५) 'लिख' धातुक रूपावली अठारहो वर्ग में पूर्ण वर्त्तमान, अपूर्ण भूत तथा सामान्य भविष्यत् कालक दूनू वाच्य ओ भाव मे लिखू।

(६) प्रेरणार्थक क्रिया, संयुक्त क्रिया तथा नाम धातुक पाँच-पाँच टा उदाहरण दिअ।

(७) क्रिया द्योतक कै प्रकारक अछि, सोदाहरण लिखू।

अव्यय-प्रकरण

हम कालिह ऐब। रामक पश्चात् श्याम ऐताह।

जँ पानि नहि भेल, तँ धान जरि गेल।

दुरजी ! इहो किछु बात थीक ?

एहि सब वाक्य मे कालिह, पश्चात्, जैं, तें, नहि, और दुरजी एहन शब्द थीक जकरा मे कोनहु रीति सँ कोनो विकार वा परिवर्तन नहि होइछ। तेँ ई सब अव्यय शब्द थीक।

कालिह, परसू, जैं, तैं आदि एहन अव्यय थीक जे क्रियाक समय आदिक सूचना दैछ अर्थात् ओकर विशेषता सूचित करैछ। तें ई सब *क्रियाविशेषण* थीक।

पश्चात्, पूर्व, ऊपर, नीचाँ, बाहर, भीतर, आदि कोनो वस्तुसँ सम्बन्ध सूचित करैछ, यथा--रामक पश्चात्, खैबाक पूर्व वा पहिने, कोठाक ऊपर, घरक बाहर आदि। तें ई सब *सम्बन्धार्थक* अव्यय थीक।

जेँ-ते, यद्यपि-तथापि, मुदा, अथवा आदि दू वा दू सँ अधिक वाक्यकेँ जोड़ैछ अथवा बिभक्त करैछ तेँ ई सब *समुच्चय बोधक* अव्यय थीक।

हा, अहा, अरे, ओः आदि चित्तक हर्ष वा विस्मयादि सूचित करैछ, तेँ ई सब *विस्मयादिबोधक* अव्यय थीक।

एहि सँ निश्चित भेल जे अव्यय चारि प्रकारक अछि--क्रियाविशेषण, सम्बन्धार्थक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादि बोधक।

------

(१) क्रियाविशेषण

प्रातः काल उठी, बहुत दूर बाहर चल जाइ, जोर सँ टहली, कनेक सुस्तैबो करी।

एहि वाक्य सभ मे प्रातः काल 'उठब' क्रियाक समयक विशेषता सूचित करैछ, बहुत दूर बाहर 'चल जाइ' क्रियाक स्थानक सूचना दैछ। जोर सँ 'टहली' क्रियाक रीतिक सूचना दैछ एवं कनेक 'सुस्तैबो करी' क्रियाक परिमाण जनबैत अछि अतः ई सब तत्तत् प्रकारक क्रियाविशेषण थीक। क्रियाविशेषणक यैह चारि भेद अछि। नीचा तकर किछु तालिका देल जाइछ--

कालवाचक क्रियाविशेषण—एहि सँ (१) समयक निर्द्धारण (२) अवधि व्याप्ति एवं (३) पौनः पुन्यादि सूचित होइछ—(१) समयक सूचना—भोर-साँझ, जखन, तखन, ऐखन, तैखन, कालिह, परसू, आइ, कखनहु, कखन, सदिखन, परुकाँ, तेसुरकाँ, पहिने, पाछाँ, तुरन्त, सदा, सर्वदा, इत्यादि (२) अवधिक सूचना—दिन भरि, क्षणभरि, कालिह पर्यन्त, कखन धरि, लगा॰ तार, कहिओ-ने-कहिओ, निरन्तर आदि और (३) पौनः पुन्यक सूचना—बारम्बार, नित्य, सबदिन, घड़ी-घड़ी, क्षण-क्षण, बहुधा, पुनि, फेरि आदि सँ भेटैत अछि।

स्थानवाचक क्रियाविशेषण—एहू सँ (१) स्थानक निर्द्धारण (२) व्याप्ति एवं (३) दिशाक ज्ञान होइछ, यथा—स्थान - एतै, ओतै, जतै, ततै, कतै, आगू, पाछू, भीतर, बाहर, उपर नीचाँ आदि; व्याप्ति—एतै धरि, ओतै पर्यन्त, लगातार, कतहु-ने-कतहु, सर्वत्र, यत्र-तत्र, ओतेक दूर, लग, पास, फरिकाँ, कात, माँझ, बीच, आदि एवं दिशा—एम्हर, ओम्हर, एहि दिशि,

ओहि दिशि, पूबभर, पश्चिमभर आदि, बामा, दहिना, बाम-दिशि, दहिना कात, ओहि दिशि आदि।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण—बहुत, अधिक, ढेर, अत्यन्त, थोड़, थोड़ेक, कनेक, एतेक, ओतेक, जतेक, ततेक, कतेक, यथासाध्य, यथेष्ट, बस, खूब, केवल, प्रायः आदि।

रीतिवाचक क्रियाविशेषण—एहि सँ प्रकार वा रीति, स्वीकृति, निषेध, कारण, निश्चय, अवधारण, आदिक सूचना भेटैछ, यथा—नहूँ-नहूँ, तड़फड़, झटपट, कहुना, सहजहि, वृथा आदि।

स्वीकृति—हँ, ठीक, सरिपहुँ, वेश।

निषेध—जनु, मना, न, नहि, मति।

कारण—तेँ, जेँ, किऐक, सुतरां, तेँ हेतु।

निश्चय—ठीक, अवश्य, सरिपहुँ, यथार्थतः।

अनिश्चय—जँ, जँपछ, कहुना, कदाचित, कीदन, कहाँदन।

अवधारण—तँ, धरि, भरि, सन टा, मात्र।

(२) सम्बन्धार्थक अव्यय

ई कोनो-ने-कोनो सम्बन्ध कारकक बाद अबैछ, यथा—घरक बाहर, दलानक भीतर आदि। आगू, पाछू, पहिने, पूर्व, पश्चात्, बाद, भीतर, बीच, माँझ, लगभग, उपर, नीचाँ, तर, सोझाँ, पास, कात, लग, द्वारा, मारि, खातिर, लैल, अपेक्षा,

लेखे, बदला, सन, समान, बराबरि, चनटा, संग, समेत, बश, लै, दै, दन, आदि।

टि०—[स्पष्ट अछि जे एहि मे सँ वतेक शब्द सम्बन्ध कारक क चिह्न बिना व्यवहृत भै सकैछ, · यथा—पहिने हम चलब तखन अहाँ जैब। एहि मे 'पहिने' सम्बन्धार्थक नहि रहल। साधारण काल-वाचक क्रियाविशेषण रहल। मुदा 'रामक पहिने श्याम ऐल' कही तँ ई सम्बन्धार्थक हैत।]

(३) समुच्चयबोधक अव्यय

ई सम्बन्धार्थक, संयोगार्थक, एवं वियोगार्थक तीन प्रकारक होइछ, तथा--

सम्बन्धार्थक-यदि··· ते (तँ), जैं···तँ, तों--मुदा, यद्यपि तथापि, जे—से, ने--ने, जें हेतु--तें इत्यादि।

संयोगार्थक--ओ, और, अथच, तथा, एवं, जे, से, ने-ने, बरू, जें, तें, तैं हेतु, अतः, अतएव, हेतु, कारण, यदि, तथापि, तैओ, हुँ,--हिं, (रामहुँ सँ लिअ, रामहिं सँ लिअ) आदि। वियोगार्थक—मुदा, किन्तु, परन्तु, परञ्च, वा, अथवा, किंवा, कि, आकि, नहि, नहि तँ आदि।

(४) विस्मयादि बोधक अव्यय

एहि सँ हर्ष, विषाद, विस्मय, आदिक सूचना भेटैछ, यथा--हर्षमे--बाह, बाह बाह, बस, धन्य, अहा, चाबस, बहुत खूब, बेरा, बड़बेश, अलबत्त। विषाद मे-ओः, आः,

ईः, ऊः, एः, हाय, हायहाय, हायराम, शोक, महाशोक, बाप-रे-बाप, दैव-रे-दैव, त्राहि-त्राहि, रामराम आदि। आश्चर्यं मे—अरे, ओः, ओहो, आः।

घृणामे—दुर, छी, दुरछी, दुत, दुरजी, राम-राम, शिव-शिव छिया, छिया-छिया, छिः!

प्रश्न

(१) अव्यय कोन प्रकारक शब्द कें कहल जाइछ? एकर कै भेद अछि?

(२) क्रियाविशेषण ककरा कही, एकर भेद सोदाहरण लिखू।

(३) स्थानवाचक अव्यय कै प्रकारक अछि, प्रत्येकक पाँच पाँच उदाहरण दिअ।

(४) कालवाचक अव्यय कै प्रकारक अछि. प्रत्येकक उदारहण दिअ?

(५) सम्बन्धार्थक अव्ययक विशेषता की छैक? वाक्यमे व्यवहार कै एकर प्रयोग देखाउ।

(६) समुच्चयवोधक अव्यय ककरा कही, एकर प्रकार एवं उदाहरण दिअ।

(७) विस्मयादिवोधक अव्ययक दशटा उदाहरण लिखू जाहि सँ हर्ष, शोकादि भिन्न-भिन्न भाव प्रगट हो।

(८) एहि सब अव्ययक प्रकार लिखू—कतै, तें, सदिखन, कखन, जँ, अपेक्षा, सन, मुदा, वाह, छी छी!

शब्दांश

प्रचार, प्रहार, प्रकार, प्रतिकार, प्रतिकूल, प्रत्युत्तर
विषधर, लठिधर, धोधिगर, मुँहगर, पढनिआँ, भजनिआँ

ऊपरका पंक्तिक शब्द सब पर ध्यान देने पता लगैछ जे प्र, प्रति आदि कोनो शब्द नहि थीक, शब्दक अंश थीक। भिन्न-भिन्न शब्द क पहिने एकरा लगाय भिन्न-भिन्न अर्थक शब्द बनौल जाइछ। तहिना दोसर पाँतीक शब्द पर विचार कैला सँ पता लगैछ जे धर, गर, इआँ सेहो शब्दांशे थीक, जकरा शब्दक अंत मे लगाय भिन्न-भिन्न प्रकारक शब्द बनौल जाइछ। शब्दक आरंभ मे लगनिहार शब्दांश कें उपसग कहल जाइछ एवं अन्त मे लगनिहार कें प्रत्यय। तें शब्दांश दू प्रकारक अछि (१) उपसर्ग जे शब्दक पहिने लगैछ यथा-प्र, परा, सु, अनु, इत्यादि। और (२) प्रत्यय जे शब्दक अन्त मे लगैछ, यथा—धर, गर, हार, ड़ी, औटा आदि।

(१) उपसर्ग

उपसर्गक संख्या—२२ अछि, जकर किछु उदाहरण नीचाँ देल जाइछ—

अ--निषेधार्थक उपसर्ग थीक, यथा—अप्रसन्न, अनादि, अनन्त। (स्वर वर्ण आदिमे रहने 'अ' क बदला 'अन्' लगैछ)

आ—सीमा, संग्रह आदिक अर्थ मे--आसमुद्र, आकंठ,

आकर, आमंत्रण, आरोग्य।

अनु—पश्चात्, सादृश्य, क्रम आदिक बोधक—अनुगमन, अनुकूल, अनुरूप, अनुक्रमण आदि।

अभि—प्रधानता, विषय-विभाग, भिन्नता, आदिक अर्थ मे, यथा—अभियान, अभियोग, अभिप्राय, अभिशाप, अभ्युदय।

अपि—विशेषता सूचक—अपिधान, अप्यात्त।

अव—अनादर, राहित्य आदिक अर्थ मे—अवकाश, अवहेला, अवगुण, अवज्ञा।

अधि—अधिकार, प्रधानता, विषय-विभागदि अर्थ मे—अधिपति, अध्यापक, अध्याय, अध्यवसाय।

सु—श्रेष्ठता वा उत्तमताक अर्थ मे—सुराज, सुदेश, सुलभ, सुगम।

अति—उत्कर्ष, आधिक्य आदिक अर्थ मे—अतिकाल, अतिमानुष, अत्यावश्यक, अत्यन्त।

वि—भिन्नता, हीनता विशेषणादि अर्थ मे—विराग, वियोग, विषम, विगत।

दुः—कष्ट, निन्दा, दुष्टताक अर्थ मे—दुर्वृत्ति दुस्साध्य, दुर्धर्ष, दुर्बुद्धि, दुर्दान्त।

निः—रहित निषेध आदिक अर्थ मे—निर्गुण, निर्बल, निराकार।

नि—निषेध, अवरोधादिक अर्थ मे—नियम, निधन, निरोध, निदान।

प्रति—विरोध, सादृश्यादि अर्थ मे--प्रतिकूल, प्रतिक्रिया, प्रत्येक ।

परि—सर्वत्र, अतिशय, त्यागादि अर्थ मे—परिपूर्ण, परिवर्त्तन, परिजन ।

उप—सामीप्य, लघुतादि अर्थ मे—उपाध्यक्ष, उपसभापति, उपनिवेश ।

कु--निकृष्टता, घृणादि मे—कुरोग, कुपुत्र, कुत्सित ।

प्र–विशेषताक अर्थ मे--प्रक्रिया, प्रबन्ध, प्रवचन, प्रणाम।

परा--धुरब, बाहुल्यादि अर्थ मे--पराक्रम, पराभव, पराकाष्ठा ।

अप--हीनता, अपमानादि अर्थ मे--अपचेष्ट, अपराध, अपवाद, अपकार ।

सम्--संयोग उत्तमतादि मे--संतुष्ट, समाचार, संसार, संवत्सर ।

उत्--उच्चता, उत्कर्षादिक अर्थ मे--उत्पत्ति, उत्पात, उद्योग, उत्थान ।

[२] प्रत्यय

गवैया, चढ़ौनिहार, बनौआ, चढ़ौआ, ओढ़ना, छनना, पनिगर, रतिगर, पुजेगरी, धनहा, भेड़िहर, तबालची,

प्रथम पंक्तिक ऐआ, औनिहार, औआ, ना, आदि प्रत्यय

एहन अछि जे भिन्न भिन्न धातु वा क्रिया मे लगैछ। एहि प्रत्यय सब कें कृदन्त प्रत्यय कहल जाइछ। दोसर पंक्तिक प्रत्यय गर, गरी, हर, ची आदि एहन थीक जे संज्ञा मे लगैछ। एकरा सबकें तद्धित प्रत्यय कहल जाइछ। अतएव प्रत्यय दू प्रकारक अछि। [क] कृदन्त आ' [ख] तद्धित। एहन दूनू प्रकारक प्रत्यय सँ बनल शब्द संज्ञा, विशेषण वा क्रिया-विशेषण होइछ।

(क) कृदन्त

ई प्रत्यय चारि प्रकारक अछि—कर्तृवाचक-जाहि सँ कोनों काज कैनिहार अर्थात् कर्त्ताक बोध होइछ, कर्मवाचक—जाहि सँ कर्म वाचक अर्थात् क्रियाक फल सँ आक्रान्त भेनिहारक बोध होइछ, करण वाचक-जाहि सँ एहन वस्तुक बोध होइछ जकरा द्वारा क्रिया कैल जाय तथा भाववाचक-जाहि सँ ओहि क्रियाक भाव मात्र सूचित हो।

कर्तृवाचक—कृदन्त प्रत्यय निम्न लिखित अछि—

वाला, बाल—करै वाला, देबाल, लेबाल [लेनिहार]

हार—कैनिहार, भेनिहार, पढ़निहार, सुननिहार आदि।

आब—दुहाब, [दुहनिहार]।

आउ—बिकाउ, टिकाउ।

ऐत—फनैत, उड़ैत।

ता—चलता, फिरता, रमता।

सार—मिलनसार, चलनसार।

औआ—बनौआ, बिकौआ।

ऐआ—गवैआ, बजैआ, पिवैआ, कहवैआ।

क—पिआक, चलाक, उड़ाक, फिराक।

कर्मवाचक कृदन्त—ना—ओढ़ना, बिछौना।

नी—पीनी, खैनी, सुँघनी, चटनी।

करणवाचक—ना—घोटना, ढकना, छनना।

नि—चालनि, बाढ़नि, बीअनि।

नी—कतरनी, मथनी।

भाववाचक—आ + ई—लिखा-पढ़ी, देखा-सुनी, मारामारी।

औनी—पढ़ौनी, पटौनी।

औन—पटौन, घिनौन, सुखौन, बहतौन।

ओट, आवट, हट—सजाओट, लिखाओट, मिलावट खरखराहट।

ई—बोली, चाली, इ—चढ़ाइ, बुनाइ, मढ़ाइ, महाइ, मारि, चालि।

औआ—चढ़ौआ। न—देन, पाओन।

टि० [एकर अतिरिक्त संस्कृतक अनेक कृत प्रत्यय अछि जकर व्यवहार मैथिली मे प्रचुर मात्रा मे होइछ, यथा...दर्शक, लेखक, ग्राहक, दाता, ग्रहीता आदि कर्तृवाचक, द्रष्टव्य, कर्त्तव्य, दृश्य, कृत्य, रम्य, दर्शनीय, कमनीय, पठनीय आदि कर्मवाचक, कार्य, दान, श्रवण आदि भाववाचक।]

(ख) तद्धित

तद्धित प्रत्यय अनेक प्रकारक अछि—कर्त्तृवाचक, भाववाचक, समूहवाचक आदि।

आधिक्य वा युक्तार्थ मे—गर—पनिगर, धोधिगर, नोनगर, लोकगर, मुहगर, नोखगर।

सादृश्यक अर्थ मे-मा-पनमा, कोनमा (पानसन, कोनसन)। जीविकाक अर्थ मे—हर, हार—खेतिहर, भेड़िहर, सुतिहार, चुड़िहार, लोहार, सोनार।

व्यवसायक अर्थ मे—बार—घटवार, बगबार। वाह—हरवाह, कोरवाह। ची—चिलमची, अफिमची, मसालची, तवालची। गरी—पुजेगरी।

रहनिहार क अर्थ मे—ई—जंगली, स्वदेशी। ई—[भाषा वा जातिक अर्थ मे] भोजपुरी, मगही, मैथिली, अंगरेजी, हिन्दी, गुजराती, बिहारी।

कर्तृत्व अर्थ मे—क—पाठक, लेखक, वाचक।

इब्रा—भजनिब्रा, पचनिब्रा, बजनिब्रा, नचनिब्रा।

इआ—पमरिआ (पम्मार गौनिहार), ढोलिआ, नोनिआ, भनसिआ, जिरतिआ, अढ़तिआ।

स्थानक अर्थ मे—सार—हथिसार, घोड़सार, चटसार।

इषदर्थ मे—आइन—बिसाइन, चिराइन, हरिआइन।

सम्बन्धार्थमे—इऔत—मसिऔत, पिसिऔत, मसिऔत।

विकारार्थ मे— औड़ी—कुम्हरौड़ी, तिलौड़ी, दनौड़ी।

युक्तार्थ मे—मान, वाला—बुद्धिमान, धनमान, श्रीमान,

दूधवाला, फूलवाला, गामवाला।

इला, ला—(ऐनिहार) वा रहनिहार क अर्थ मे—अगिला, पछिला, कोनैला, कोरैला।

ई—(ज्ञाताक अर्थ मे)—वेदान्ती, ज्योतिषी, शास्त्री, हिसाबी।

ऐआ—(रहनिहारक अर्थ मे)—बनैआ, घरैआ, गमैआ।

वा, हा, अं—(दिशोत्पन्नक अर्थ मे)—पुरबा, पछवा, उतरहा, दछिनाहा, उत्तरं।

का, उका—(युक्तार्थक) ललका, टेढ़का, पहिलुका, कल्हुका

ऊ युक्तार्थ मे)—पेट्टू, चट्टू (कर्म) घट्टू (कर्म) जरू, टहलू।

भाववाचक—एकरो बहुत भेद अछि, किछु नीचाँ दै छी—

पन, पनी—नेनपन, नङटपनी, छुलहपन, छुलहपनी। गिरी—सिपहिगिरी, वैदगिरी, खबरगिरी। आह—अमताह, पनिसाह, उकठाह, लेराह, ठोराह। आइ—मोटाइ, गोराइ, चिकनाइ, चतुराइ, चकराइ।

ई—हरिअरी, पोगी, लाली, बदमाशी, डकैती, चोरी।

पन, पनी—नेनपन, बतहपन, गुंडपनी।

री, आरी—बुढ़ारी, छबारी, लवारी, गौंआरी, पनिहारी।

ऐती—अपनैती, ठकैती, कुटमैती, पचैती, बभनैती।

इआ—इजोरिया, अन्हरिया।

औन—अन्हरौन, मेघौन, बदरिऔन, नेनौन।

आहु—बयसाहु, झगड़ाहु।

आम—सोतिआम, पंडिताम, तिरहुताम, कैथाम।

औअलि—लठिऔअलि, मुक्किऔअलि, जुत्तिऔअलि।

टि०—संस्कृतक ता, त्व, सँ मनुष्यता, पशुता, देवत्व, महत्त्व तथा आन आन प्रत्यय सँ शैशव, लाघव, गरिमा, लघिमा, सौन्दर्य, औदार्य आदि अनेकानेक शब्द मैथिली मे चलैछ।

कर्म वाचक तँ नहि मुदा कर्मार्थ व्यवहृत भेने निम्नलिखित किछु प्रत्यय कें कर्म वाचक कहि सकैत छी, यथा—दान-दानी कलमदान, नोसिदानी।

औत-कठौत। औट, औटी—कजरौटी, चुनौटी, सिलौट।

अपत्य वाचक प्रत्यय सँ ताहि वंश वा सम्प्रदाय मे उत्पन्न वा दीक्षितक अर्थ होइछ। ई अधिकतः संस्कृते प्रत्यय अछि, यथा—रघु सँ राघव, शिव सँ शैव, शक्ति सँ शाक्त, विष्णु सँ वैष्णव, दशरथ सँ दाशरथी आदि। मैथिली मे 'ई' प्रत्यय सँ दयानन्दी, रामानन्दी, कबीरपंथी, हो लगाय कविराही।

ऊनार्थ वाची प्रत्यय सँ ताहि वस्तु सँ छोट वस्तुक बोध होइछ। इहो अनेक अछि, यथा—

ई—थारी, बाटी, आसनी, डाली, मटकुडी, छाँछी, कोही।

अकी—छोटकी, बड़की, पतरकी।

टि० [एहि सबमे ई नहि बुझक चाही जे ई सब शब्द थार, बट्टा, आसन, कोहा आदिक स्त्रीलिङ्ग रूप थीक। एहि सबसँ केवल छोटाइ बुझना जाइछ। एहि प्रकारक ऊनार्थ वाची

प्रत्यय व्यक्तिवाचक नामहुँ मे बहुधा स्नेहाधिक्य वा घृणात्मक भाव मे लगौल जाइछ यथा मधुआ, रघुआ, जदुआ, मोहना, सुकनी, राधिआ, सितवा आदि ।]

ली, उला—कोठली, कटुली, खटुली ।

इया—नेनिआ, बाचिआ, खटिआ, पटिआ, डिबिआ ।

बा—नेनबा, बचबा ।

प्रश्न—

(१) शब्दांश ककरा कही, ई के प्रकारक अछि?

(२) कोनो पांच टा उपसर्ग सँ पांच पांच टा शब्द बनाउ?

(३) उपसर्ग तथा प्रत्ययक भेद सोदाहरण लिखू।

(४) तद्धित की थीक? एकर प्रयोग कोन कोन अर्थ मे होइछ, उदाहरण दैत लिखू।

(५) क्रिया मे को प्रत्यय लगैछ तथा ई के प्रकारक होइछ सभक दू दूटा उदाहरण दिअ।

(६) निम्न लिखित की थीक, अपना शब्द मे एकर प्रयोग करू—अब, आत, सार, ऐत, वि, दानी, दुः, हार तथा अनु।

(७) निम्न लिखित शब्द मे कोन प्रत्यय लागल अछि—कृदन्त वा तद्धित तकर उल्लेख करू—चटनी, नहरनी, ओरिऔन, मेघौन, कमार, गमैआ।

समास

गंगा-स्नान, क्षीर-सागर, मुँहचोर, चूड़ा-दही-चीनी

एहि सब शब्द मे प्रत्येक क भीतर दू-दू तीन तीन शब्द जुटल

अछि। सबदा पूर्वपदक विभक्ति हटल छैक। एहि सँ अनेक लाभ अछि। गंगाक स्नान नहि कहि केवल गंगा-स्नान कहने ओतबे अर्थ अबैछ। संगहि एक अक्षरक लाघव भेल। तहिना चूड़ाक दहीक चीनीक भोज नहि कहि केवल चूड़ा-दही-चीनीक भोज कहने दू आखरक लाभ भेल। एहि प्रकारक मिलावट कें 'समास' कहल जाइछ। मिलल पद कें 'समस्त पद' कहल जाइछ।

समास कैक प्रकारक अछि। यदि अंतिम पदक अर्थ प्रधान हो तखन *तत्पुरुष*, यदि सब पदक अर्थ एके रंग प्रधान हो तँ *द्वन्द्व* और यदि कोनो पदक अर्थ प्रधान नहि भै कोनो तेसरे अर्थक प्रधानता हो तँ *बहुव्रीहि* समास होइछ। तत्पुरुष समास मे यदि विशेष्य ओ विशेषणक समास हो तँ *कर्मधारय* और कर्मधारय मे यदि संख्यावाचक विशेषण हो तँ *द्विगु* समास होइछ। अव्यय पदक समास हो तथा समस्त पद से हो अव्यय बनि जाए तँ *अव्ययीभाव* समास होइछ। येह छौ गोट *समास* अछि। नीचाँ प्रत्येकक उदाहरण देल जाइछ—

भिखमङ्गा, आँखिफोड़ा, तिमनचट्टा

सब मे अंतिम पदक अर्थ प्रधान अछि, तें ई सब तत्पुरुष समास थीक मुदा प्रथमपद सभक कर्मकारक थीक तें ई द्वितीया तत्पुरुष कहल जाइछ।

दयापूर्ण, शोकाकुल, दुःखार्त्त आदिक प्रथम पद करण कारक अछि तें ई सब तृतीया तत्पुरुष थीक।

क्षमा-प्रार्थी, बटखर्चा, पाथेभक्ष—एहि सब समस्त पद मे प्रथम पद सम्प्रदान कारक अछि, तँ ई सब चतुर्थी तत्पुरुष थीक।

जातिभ्रष्ट, गुणहीन, देश-निकाला आदि मे प्रथम पद अपादान कारक अछि, तें ई सब पंचमी तत्पुरुष थीक।

कन्यादान, भोजनव्यय, रत्नपरीक्षा, लोकापवाद आदि मे प्रथम पद सम्बन्ध कारक अछि, तें ई सब षष्ठी तत्पुरुष थीक।

अरण्यरोदन, नरसिंह कुलकमल आदि मे प्रथम पद अधिकरण कारक अछि तें ई सब सप्तमी तत्पुरुष थीक।

कमलनयन, चन्द्रमुख, महानवमी आदिक प्रथम पद विशेषण ओ दोसर ओकरे विशेष्य थीक, तें एहि प्रकारक समास कें कर्मधारय कहल जाइछ।

पंचमुख, त्रिगुण, सप्तद्वीप आदि विशेष्य विशेषण तँ थीक मुदा विशेषण संख्या वाचक छैक तें ई सब द्विगु समास थीक।

लोकवेद, हाथपैर, अंग-प्रतिअंग, धर्मार्थ-काम-मोक्ष आदिक सब पद एक रंग प्रधान अछि तें ई सब द्वन्द्व समास थीक।

चन्द्रशेखर, पीताम्बर, वंशीधर, जलज आदिक जे शब्दार्थ अछि ताहि सँ भिन्ने-अर्थ प्रधान अछि। चन्द्रमा जनिक ललाट पर छैन्हि, चन्द्रशेखर शब्दक अर्थ एतबे अछि मुदा चन्द्रशेखर महादेव नामक देवताक हेतु व्यवहृत होइछ। अर्थात् एहिमे ने चन्द्रमे प्रधान रहल ने ललाटे, एकटा देवताक अर्थ प्रधान

भेल जनिका ललाटपर चन्द्रमा छथिन्ह । तहिना पीताम्बर नाम कृष्णाक, वंशीधर नाम हुनके, जलजं नाम कमलक अछि । ई सब शब्दार्थ कें गौण बनौने अछि, तें ई सब बहुव्रीहि समास भेल।

बहुव्रीहि दू प्रकारक अछि—(१) समानाधिकरण जाहि मे विशेष्य-विशेषण वा उपमा-उपमेयक समास होइछ, यथा कमलनयन, चन्द्रमुख, पीताम्बर, चतुर्भुज आदि। दोसर व्यधिकरण जाहि मे केवल विशेष्य पदक समास हो यथा, हलधर, चक्रपाणि, नरसिंह आदि।

टि०—[कोनो समस्त पदक अर्थ सँ ओकरा समासक निर्णय करबाक चाही। 'सत्यव्रत' शब्दक अर्थ यदि साधारण हो 'सत्यक-व्रत' तखन ई तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) भेल। यदि सत्य कें व्रतक विशेषण मानी एवं एकर अर्थ करी 'साँच व्रत' तखन ई कर्मधारय समास कहौत। यदि सत्य एव व्रत दूनू कें प्रधान मानि 'सत्य तथा व्रत' एकर अर्थ करी तँ ई द्वन्द्व समास भै जैत। एहि एकर अर्थ करी—'सत्य छैक जाहि मनुष्य वा पुरुषक व्रत से व्यक्ति' तखन ई बहु-व्रीहि भै गेल। एहि मे सत्य अथवा व्रतक अर्थ गौण भै गेल, एकटा मनुष्यक अर्थ प्रधान भै गेल।]

प्रतिदिन, यथाशक्ति, निस्संदेह आदि समस्त पद अव्यय पदक संग समस्त भेल अछि तथा समस्त भेलहु पर अव्यये रहल अर्थात् एहिमे लिंग वचनादिक कारणे कोनो परिवर्त्तन नहि भै सकैछ, तें ई सब अव्ययीभाव समास कहबैछ।

अज्ञान, अनादर, अनभिन्हार, अनजान आदि सँ निषे-

वाचक अर्थ अबैछ, यथा—नहि ज्ञान वा नहि ठीक ज्ञान अकरा, नहि आदर आदि। ई सब नञ् समास कहबैछ। स्वर यदि पहिल अक्षर रहै। छैक तँ 'अ' क स्थान मे 'अन्' भबै छैक, ई स्मरण रहक चाही।

प्रश्न

(१) समास ककरा कहल जाइछ, ई कै प्रकारक अछि, सोदाहरण लिखू।

(२) निम्नलिखित शब्दक विग्रह पूर्वक समास लिखू-गान्धी जयन्ती, चोरबाजारी, भोजन-भट्ट, नटनागर, चतुरानन, दशवदन, अनारम्भ, नित्यप्रति, चन्द्रवदनी, अनीश्वर, रक्तचन्दन, महाभारत, हृदयरोग, जन्मान्ध, हरिहरनाथ।

(३) चन्द्रानन, कमलमुख, गिरिधर, चरणरज, ज्ञानानन्द एहि सभक जतेक प्रकारक विग्रह भै सकै से करैत समासक भेद लिखू।

(४) बहुब्रीहि समासक भेद तथा उदाहरण लिखू।

द्विरुक्ति

मारू मारू, राम राम, गाम गामक लोक

एहि सँ बूझि पड़ैछ जे कतहु-कतहु कोनो-कोनो शब्द कें दोहराए कें लिखला सँ अधिक स्पष्ट अर्थ वा चमत्कार अबैछ। तकरे नाम द्विरुक्ति थिकैक।

निम्नलिखित स्थान मे एकर व्यवहार मुख्यतः देखल जाइछ :—

विस्मय वा घृणा मे—शिव शिव ? वा राम राम ? एना किये कैल ? प्रत्येकार्थ मे—घर घर ई रोग पसरल अछि।

समुदायक अर्थ मे—गामक गाम अग्निकांड मे स्वाहा भै गेल।

भय, क्रोध, स्नेहादिक आधिक्य मे—आउ आउ एम्हरहि आउ। चोर चोर, पकड़ू पकड़ू, मारू मारू आदि।

अविराम क्रिया मे—पड़ल पड़ल लोथ भेलहुँ, देखैत-देखैत राति बीति गेल।

समान विभाग मे—दश दश विद्यार्थी कें एक एक कोठरी मे बैसाउ।

आधिक्य वा अविरामक अर्थ मे—राम राम कहू वा कहैत रहू।

क्रम निर्द्धारण मे—कने कने बाजू, थोड़े थोड़े खर्च करू, मन मन पढ़ू, चोर चोर मसियौत भाय।

उत्कृष्टता वा निकृष्टताक सूचना मे—नीक सँ नीक, ऊँच सँ ऊँच।

निश्चयार्थक हिं, हु, ए तथा ओ

रामहि कें दिऔ, रामहुँ कें दिऔ।

एहि दूनू वाक्य मे केवल हिं और हुँ क कारणे अर्थ में भारी अन्तर आबि गेल। एक अछि वियोजक दोसर अछि संयोजक। एकक अर्थ थीक, जे केवल रामहि कें देल जाय।

दोसराक अर्थ अनेकक संग संग रामहुँ कें देल जाय।

एकरे संक्षिप्त रूप अछि ए तथा ओ, यथा—रामे खाथु। रामो खाथु। पूर्ववते दूनू क अन्तर अछि।

रामो गोविन्द जाथु वा राम गोविन्दे जाथु।

रामे गोविन्द जाथु वा राम गोविन्दो जाथु।

स्पष्ट अछि जे मैथिली मे ए ओ क प्रयोग बीचहुमे भै सकैछ।

प्रश्न

(१) शब्दक द्विरुक्ति कोन-कोन अवस्था मे होइछ? प्रत्येकक दू दू उदाहरण लिखू।

(२) द्विरुक्ति सँ लाभ की अछि?

(३) संयोगार्थक एवं वियोगार्थक 'हि' क व्यवहार पृथक्-पृथक् उदाहरण द्वारा देखाउ।

(४) 'हिं' तथा 'हुँ' क लाघव कोना कैल जाइछ? वाक्य मे व्यवहार कै कै देखाउ।

वाक्य विचार

भेल। आइ वर्षा॥ आइ वर्षा भेल।

'भेल' केवल एतबे कहने क्रिया मात्रक बोध भेल मुदा के कैलक कतै कोना किछु नहि बुझि पड़ल। 'आइ वर्षा' एतबहु सँ कोनो पूर्ण अर्थ नहि अबैछ। मुदा अन्तिम तीनू शब्द सँ पूर्ण अर्थ आबि गेल। पूर्ण अर्थक तात्पर्य एतबे जे कोनो वस्तुक विषय म कहल जाय तथा ओकरा विषय मे किछु

कहल जाय। जकरा विषय वा जाहि विषय मे कहल जाइछ से उद्देश्य कहबैत छैक एवं उद्देश्य क सम्बन्ध मे जे किछु कहल जाइछ तकरा विधेय कहल जाइछ। एहि सँ ई निश्चय भेल जे यावत् कम सँ कम एकटा उद्देश्य ओ तकर विधेय नहि रहत तावत् अर्थ पूर्ण नहि हैत। अतः वाक्य तकर नाम थिकै जाहि मे कम सँ कम एकटा उद्देश्य ओ तकर विधेय रहैक। उपर्युक्त वाक्य मे 'वर्षा' उद्देश्य तथा 'आइ भेल' विधेय थीक।

वाक्यक भेद

[१] राम स्कूल जाइत अछि [२] राम स्कूल जाइछ मुदा गोविन्द सुति रहैछ [३] गोविन्द जखन सुतल रहैछ तखन राम पढ़ैत रहैछ।

ऊपर मे तीनटा वाक्य देल गेल अछि। प्रथम वाक्य मे केवल एकटा उद्देश्य 'राम' और 'स्कूल जाइत अछि' ओकर विधेय छैक। ई *सरल वाक्य* थीक।

दोसर वाक्य दू वाक्यक जोड़ सँ बनल अछि। प्रत्येक मे एकटा उद्देश्य और तकर विधेय छैक। दूनू वाक्यक संयोजक अछि 'मुदा' एहिना दू वा दू सँ अधिक वाक्य यदि स्वतंत्र रीतिएँ एक दोसरा सँ संयुक्त वा वियुक्त रहै तँ ओकरा *संयुक्त वाक्य* कहल जाइछ। एहि मे संयुक्त वाक्य सब खंड वाक्य कहबैछ।

तेसरो वाक्य मे दू वाक्य अछि मुदा प्रथम वाक्य गौण और दोसर वाक्य प्रधान छैक। पहिल वाक्य दोसराक अंग थिकै। एहिना जखन दू वा दू सँ अधिक वाक्य परस्पर अगांगि भाव सँ सम्बद्ध रहै (जाहि मे एकटा प्रधान वा अंगी एवं दोसर ओकर आश्रित वा अंग होइ) तँ ओ सम्बद्ध वाक्य कहल जाइछ।

व्युत्पत्तिक विचार सँ वाक्यक येह तीन भेद अछि।

———

अंग-वाक्य ओ प्रधान-वाक्य

[१] गोविन्द जनैत अछि जे राम प्रति दिन स्कूल जाइत अछि।

[२] गोविन्द, जे राम सँ जेठ छैक, किछु नहि पढ़ैत छैक।

[३] जखन गोविन्द सूतल रहैत अछि, तखन राम पढ़ैत रहैत अछि।

प्रथम वाक्य मे प्रथम खण्ड प्रधान ओ दोसर खण्ड ओकर आश्रित वाक्य थिकै। ई प्रथम वाक्यक क्रिया 'जनैत अछि'क कर्म थीक तेँ आश्रित अंग वाक्य 'राम प्रति... जाइत अछि, *संज्ञावाक्य* भेल।

दोसर वाक्य मे 'गोविन्द किछु नहि पढ़ैत छैक' प्रधान वाक्य अछि 'जे राम सँ जेठ छैक' गोविन्दक विशेषण

थिकै तेँ ई अंग वाक्य विशेषण वाक्य भेल ।

तेसर वाक्य मे 'राम पढ़ैत रहैत अछि' मुख्य वाक्य तथा दोसर वाक्य एकरा क्रिया 'पढ़ैत रहैत अछि' क क्रिया विशेषण जकाँ व्यवहृत भेल छैक तेँ ई क्रिया विशेषण वाक्य भेल ।

अंग वा आश्रित वाक्यक येह तीन भेद होइछ ।

टि० [संयुक्त वाक्यक प्रत्येक खंड स्वतंत्र रहैत छैक जे कि सरल वा सम्बद्ध भै सकैछ । यदि सम्बद्ध हो तँ उपरक रीति सँ ओकरा प्रधान तथा आश्रित वाक्य मे तोड़ैं पड़तैक यावत् सरल वाक्य नहि भेटत ।]

उद्देश्य ओ ओकर विस्तार

[१] बालक पढ़ैत अछि [संज्ञा] [२] ओ पढ़ैछ [सर्वनाम] [३] दुखी कें दुख नहि दी [विशे०] [४] पढ़ब बड़ आवश्यक अछि [क्रियार्थक संज्ञा [५] घोल भै गेल जे आगि लागल [वाक्य] ।

एहि सँ स्पष्ट भेल जे कोनो वाक्य मे उद्देश्य बहुधा कर्त्ता कारकक रूपमे रहैत छैक और से कतोक प्रकारक होइछ यथा संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम क्रियार्थक संज्ञा, ओ स्वतंत्र वाक्य ।

उद्देश्यक विस्तारो अनेक प्रकारक भै सकैछ, यथा—

(१) कारी गाय लक्ष्मी होइछ—विशेषण

(२) टूटल घर जल्दी नहि जुटैछ (कृदन्त)

(३) उपेन्द्रक पढ़ब उत्तम छैक (सम्बन्ध)

(४) रातिमे रोटी खैब उत्तम होइछ (अधिकरण)

(५) गोविन्दक भाइ राम आइ ऐल छथि (सामानाधिकरण) एही प्रकारें भिन्न भिन्न वस्तु सँ उद्देश्यक विस्तार करक चाही।

विधेय ओ विधेयक विस्तार

(१) राम एखनहि औते गेल छथि—क्रिया विशेषण

(२) हम सूतल सूतल सपनाइ छलहुं—कृदन्त

(३) ओ पढ़ि कै घर गेलाह (पूर्वकालिक क्रिया ओ कर्म)

(४) ई नेना हँसैत अबैत अछि (क्रियाद्योतक)

(५) तों पंच भेल छह (पूर्णार्थक शब्द)

अर्थक विचार सँ वाक्यक भेद

(१) राम ऐलाह (२) गाड़ी नहि ऐल (३) तों एतै आवह (४) अपने कतै जाइछी ? (५) अरे ! की विचित्र कांड उपस्थित अछि (६) भगवती अपनेक कल्याण करथु (७) एहन ने हो जे ओ कतहु चल जाथि।

एहि सातो प्रकारक वाक्य सँ पता लगैछ जे वाक्यक सात प्रकार होइछ (१) निश्चयात्मक (२) निषेधात्मक (३) अनु-

ात्मक (४) प्रश्नबोधक (५) विस्मयादिबोधक (६) काम-
नात्मक तथा (७) सन्देहात्मक ।

वाक्य-विश्लेषण

अयोध्याक राजा दशरथ अपन प्रिय पुत्र श्री रामजी क वियोग मे पानि सँ बहार भेल माछ जकाँ अत्यन्त व्याकुल भै प्राणत्याग कैलैन्हि ।

ई वाक्य देखबा मे पैघ लगैछ, मुदा थीक ई सरल वाक्य। दूनू दिशक विस्तार छोड़ि देल जाय तँ वाक्य अछि केवल—दशरथ प्राणत्याग कैलैन्हि । एकर उद्देश्य अछि 'दशरथ' तथा क्रिया अछि 'कैलैन्हि' । शेष अंश जतेक अछि से उद्देश्य अथवा विधेयक विस्तार मात्र थीक। एकर विश्लेषण आब निम्न रीति सँ सहजहि कै सकैत छी। एकरा एकटा कोष्ठक बनाय एहि रीतियें लिखबाक

चाही जाहि सँ सब वस्तु ठीक सँ विभाजित हो तथा लिखल जाय। से एहि प्रकारें ईक—

उद्देश्य		विधेय		
उद्देश्य (कर्त्ता)	उद्देश्यक विस्तार	क्रिया	कर्म	विधेयक विस्तार (क्रिया विशेषण वा पूरक आदि
दशरथ	अयोध्या क राजा (समानाधिकरण)	कैलन्हि	प्राण त्याग	अपना प्रिय .... व्याकुल भै

दोसर वाक्य लिअ—

ई विचित्र लीला देखि मोहनक भाय तुरन्त उत्तर देलक।

उद्देश्य		विधेय		
उद्देश्य	उद्देश्यक विस्तार	क्रिया	कर्म	विधेय-विस्तार
भाय	मोहनक	देलक	उत्तर	तुरंत (क्रिया वि०) ई विचित्र लीला देखि (पू०.का० क्रियाआदि)

वाक्य संकोचन ओ सम्प्रसारण

निम्नलिखित दू प्रकारक वाक्यावली पर ध्यान दिअ—

(१) मेघ टरि गेल। आकाश स्वच्छ भै गेल। चारू दिश शान्त भै गेल।

(२) मेघक टरि गेला पर आकाश सर्वथा स्वच्छ ओ शान्त भै गेल।

एहि मे पहिल वाक्यावलीक अर्थ मे बिना कोनो अन्तर वा न्यूनता आनने दोसर प्रकारक वाक्य मे थोड़ शब्दें ओकर भाव राखल गेल। एकरे नाम सम्प्रसारण ओ वाक्य संकोचन थीक। एहि मे अनावश्यक वा द्विरुक्ति भाव कें छाँटि कै कनहु पूर्वकालिक दै वा कोनो वाक्य कें वाक्यांश बनाय अथवा अनेक शब्दक एकठाम अध्याहार कै जहाँ धरि हो पूवक वाक्य कें संकुचित वा संक्षिप्त कैल जाइत छैक। सम्प्रसारण मे एकरे विपरीत क्रिया करै पड़ैछ। एही रीतियें वाक्य-संकोचन ओ सम्प्रसारण करक चाही।

प्रश्न

निम्नलिखित वाक्य प्रसारित करू—

बुद्धिमाने बलवान होइत अछि, निर्बुद्धि कें बल कतै ?

धर्म रहत तँ धनो भै जैत। धर्म चल जैत तँ धन लै कै की करब ?

स्वस्थे लोक संसार मे सुखी अछि।

निम्नलिखित वाक्यक संकोचन करू—

मेला सँ घुरल गाम अबैत रही। लोक सब एकदम थाकल ठहिऐल छल। गाछतर वासा लीतिहि सब पड़ि रहल। आब ककरा उठाउ, के भानस करैछ ? हारि कै अपनहि उठलहुँ, चूल्हि बनौल जारनि आनल। तखन भानस कै सब कें उठाय खोऔल।



विराम-चिह्न

"तानसेन गेलाह अकबरक दरबार मे नाच होइत रहै मुदा बादशाह नहि ऐल छलाह बादशाहक ऐला पर बैजू बजलाह सरकार आगराक लगे पास जंगल अछि जकड़ा गान सँ जंगलक हरिण सब अपनहि एतै चल आबै तकरा अपने पैघ गायक मानल जाय। तानसेन तानपूरा लेलन्हि आ लगलाह गाबै गाबैत गाबैत हरान भै गेलाह एकोटा हरिण नहि ऐल तखन बादशाह बैजू बावरा कें पुछलथिन्ह की अहाँ हरिण मंगाए सकैत छी यदि हँ तखन गाउ बैजू अवश्य कहि गाबै लगलाह ओ थोड़बे गौने हैताह कि जेरिक जेरि हरिण पहुँचै लगाल सबकें आश्चर्य लगलैक बैजू अपन गराक माला एकटा हरिण कें पहिराए देलथिन्ह"।

एहि वाक्य सब मे कतहु कोनो चिह्न नहि अछि तँ कतै कतेक अटकबाक चाही से किछु नहि बुझना जाइछ। यदि विराम चिह्न दै एहि रीतिएँ लिखल जाय तँ कतेक सुपाठ्य हैत—

"तानसेन गेलाह अकबरक दरबार मे। नाच होइत रहै, मुदा बादशाह नहि ऐल छलाह। बादशाहक ऐला पर बैजू बजलाह—"सरकार! आगराक लगे पास जंगल अछि। जकरा गान सँ जंगलक हरिण सब अपनहि एतै चल आबै तकरा अपने श्रेष्ठ मानल जाय।" तानसेन तानपूरा लेलन्हि आ' लगलाह गाबै। गबैत गबैत हरान भै गेलाह, एको टा हरिण नहि ऐल, तखन बादशाह बैजू बाबारा कें पुछलथिन्ह-"की अहाँ हरिण मंगाय सकैत छी? यदि हँ, तखन गाउ।" बैजू "अवश्य", कहि गाबै लगलाह। आ थोड़बे गौने हैताह कि जेरिक जेरि हरिण पहुँचै लागल। सब कें आश्चर्य लगलैक। बैजू अपना गराक माला एकटा हरिण कें पहिराय देलथिन्ह।

आब एकर अर्थो स्पष्ट भेलैक तथा इहो बुझबा मे ऐल जे कोन ठाम पूर्ण विराम छैक, कोनठाम अर्द्ध वा अल्प विराम वा प्रश्नादिक चिह्न छैक। एही सब चिह्नक प्रयोग कें विराम विचार कहल जाइछ।

उपरक वाक्य सँ एतबा बुझैक योग्य भेल जे जाहि ठाम कोनो वाक्य पूर्ण रूपें समाप्त होइछ, ताहि ठाम पूर्ण विराम देल जाइछ। पूर्ण विरामक आकार पाइ जकाँ होइछ जेना एहू ठाम देखिए रहल छी।

जाहि ठाम कतोक अंग एवं मुख्य वाक्यक कोनो बड़का वाक्य लिखबाक हो अथवा एके वाक्यक कतोक खंड हो

अथवा एके प्रकारक कतोक वस्तु वा व्यक्तिक चर्चा हो ताहि ठाम प्रत्येक कें परस्पर विभक्त रखबाक हेतु अल्प विराम देल जाइछ। तकरा अंगरेजी मे कौमा कहल जाइछ, यथा पूर्व पृष्ठ मे कतोक ठाम अछि।

यदि कोनो प्रश्नक प्रयोजन पड़ल तँ ओहि ठाम प्रश्नवाचक चिह्न नहि देने कोना बनत ? यैह भेल से चिह्न। ककरो ध्यान अपना दिशि आकृष्ट करबा मे अथवा विस्मयादि प्रगट करबा मे प्रायः विरामें सेन विस्मयादि बोधक चिह्न (!) व्यवहृत होइछ।

यदि कोनो ठाम कोनो वस्तुक बड़काटा विवरण वा लिस्ट इत्यादि देबाक हो तँ ओतै निर्देशक चिह्न (:—) देबाक चाही जे कि दूटा विन्दुक बाद एकटा छोट रेखा सँ बनैछ। तहिना कोनो खास बात तोड़ि कै लिखबाक हो तँ दूनू कात केवल डैश वा रेखांश देबाक चाही।

दू वा अधिक शब्द कें जोड़बाक हो तँ ताहू सँ छोट योजक चिह्न (-) देल जाइछ यथा—भात-दाल, पूरी-तरकारी आदि मे अछि।

लिखबा मे कोनो शब्द अथवा पंक्ति भ्रम सँ छूटि जाय तँ काक चिह्न (‸) लगाय तकरा उपर छूटल अंश लिखबाक चाही।

संक्षेप मे एतबे विराम चिह्न अछि।



छन्द-विचार

तेसरहि खण्ड् छोड़ि रथ देश। अन्तःपुर पुनि कएल प्रवेश॥

ई चौपाई थीक। प्रथम विशेषता एकर यैह छैक जे दूनू चरण मे सोलहे सोलह मात्रा छैक। एहि सं कम-बेशी भेने ई चौपाइ नहि रहत। तेँ मात्राक ज्ञान छन्द विचार मे सब सँ पहिने आवश्यक।

वर्ण-विचार मे पढ़ि ऐल छी जे स्वर दू प्रकारक अछि, ह्रस्व ओ दीर्घ। मैथिली मे कतेक ह्रस्वो स्वर दीर्घ तथा कतेक दीर्घो ह्रस्व जकाँ बाजल जाइछ। ह्रस्वक एक मात्रा एवं दीर्घक दू मात्रा लेल जाइछ। एक मात्रा कें लघु तथा दू मात्रा कें गुरु कहल जाइछ। ई लघु वा गुरु मैथिली मे कोनो खास स्वर नहि अछि। जकरे उच्चारण एक मात्रा मे हो सैह लघु एवं जकरे दू मात्रा मे हो सैह गुरु होइछ। आब उपरक चौपाइक मात्रा गनू।

आरम्भक 'ते' ह्रस्व वा एके मात्रा मे उच्चरित अछि तें ई लघु अर्थात् एक मात्रा भेल। अस्तु, यदि लघु क ठाढ़ तथा गुरु क पड़ल रेखा सँ सूचित करी तँ ई चौपाइ मात्राक क्रमे एना लिखल जैत—

।।।। –। – ।।। – – – – ।।।।।।।।। – –

तेसरहि खंड छोड़ि रथ देश, अंतः पुर पुनि कएल प्रवेश

लघु क एक तथा गुरुकेँ दू मात्रा गनला सँ प्रत्येक चरण मे सोलह-सोलह मात्रा भेटल। अन्तिम मात्रा यद्यपि अकार

लघु थीक तथापि ओकरा दीर्घ कै पढ़वाक स्वतंत्रता वा परिपाटी छैक। मैथिली मे त आनो ठाम जखन स्वर कें अपना सुबिधानुसार ह्रस्व वा दीर्घ बाजि सकैत छी तखन अन्तिम स्वरक तँ कथे नहि। आब विचारू उपरक चौपाइ सँ मात्राक विषय मे और की नियम बहराइछ।

'ख' तथा 'अ' पर अनुस्वार अछि और 'त' पर विसर्ग अछि। ई तीनू दीर्घ वा द्विमात्रिक गनल गेल करण जे अनुस्वार ओ विसर्ग गुरु मानल जाइछ।

संयुक्ताक्षर यदि शब्दक आरम्भ मे रहै (यथा 'प्रवेश' मे अछि) तँ ओ ओहि अक्षरक स्वरक लघुता वा गुरुता सँ एकमात्रिक वा द्विमात्रिक हैत। एहि ठाम 'प्र' मे अकार ह्रस्व स्वर अछि। तेँ ई संयुक्ताक्षर लघु भेल किन्तु यदि बीच वा अन्त मे रहैत तखन एहि सँ पूर्वक ह्रस्व दीर्घ वा द्विमात्रिक होइत। यथा—

मन मति मानु मलान मातु मैथिली मर्म गुनि।
चीर चिकुर चिकचाक चान चौगुन चमकत पुनि॥
सत्वर सजत समाज साज सत्कारक सुन्दर।
पूर्व प्रतिष्ठा पैब पूर्ण पद पुजत पुरन्दर॥

एहि पद्य मे प्रथम पंक्तिक मर्म तीन मात्रा मानल जैत करण जे 'र्म' संयुक्ताक्षर अछि तें एहि सँ पूर्व जे ह्रस्व स्वर युक्त 'म' अछि से दीर्घ मानल जैत। तहिना तेसर पांतीक 'सत्वर' क 'स' सत्कारक 'स' एवं सुन्दरक 'सु' और चारिम

पांतीक 'प्रतिष्ठा' क 'ति' एवं 'पुरन्दर' पहिल 'र' गुरु मानल जैत कारण जे एहि सभक आगाँ संयुक्ताक्षर छैक। पूर्व एवं पूर्ण मे 'र्व' तथा 'र्ण' संयुक्ताक्षर अपनहि बल पर गुरु अछि। ई नियम आन शब्दक हेतु लागू नहि अछि। प्रतिष्ठाक 'प्र' संयुक्ताक्षर अछि एहि कारणे एकरा पहिनेक 'व' दीर्घ नहि मानल जैत कारण जे ओ दोसर शब्दक अक्षर थीक। तें ई निश्चय भेल जे मात्राक नियम छंद मे आवश्यक अछि मुदा दोहा चौपाइ अदि छन्द मे ई आवश्यक नहि छैक जे ओतबा मात्रा एतबे वर्ण मे आबै। सोलह मात्राक चौपाइ होइत अछि। ई सोलह मात्रा अहाँ १६ अक्षर मे राखी वा कम अक्षर मे, ई अहाँक इच्छा पर अछि। तें एहि सबकें *मात्रावृत्त* कहल जाइछ। आब दोसर प्रकारक छंद लिअ—

।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

गिरीशार्च्चना छोड़ि ई की करै छी

।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ

पर स्त्री अहाँ छद्म सौं की हरै छी

ई संस्कृतक भुजंगप्रयात छंद थीक। एकरा प्रत्येक चरण मे बीस-बीस मात्रा रहब आवश्यक अछि मुदा चौपाइ जकाँ एतबा मात्रा कतबो अक्षर मे पुरा लेब सं नहि हैत। एतबो नहि हैत जे लघु गुरु अपना इच्छानुसार अगाँ पाँछा बैसाय बीस मात्रा पुराय दी। प्रत्येक चरण मे एक लघु तथा दू दू गुरु

अर्थात् पाँच-पाँच मात्राक चारि भाग हैब अनिवार्य अछि। एहि प्रकारक भाग कें 'गण' कहल जाइछ। तें एहि प्रकारक वृत्त क वर्णवृत्त कहल जाइछ। एकरा हेतु गणक ज्ञान आवश्यक अछि। तीन तीन टा गुरु अथवा लघुक निम्नलिखित आठे गण होएत। यदि तीनूटा गुरुए राखी (- - -) तँ मगण, तीनूटा लघुए राखी (। । ।) तँ नगण, आदि मे गुरु राखी (-। ।) तँ भगण, आदि मे लघु राखी (। - -) तँ यगण, दूनू कात लघु राखी (। - ।) तँ जगण दूनू कात गुरु राखी (-।-) तँ रगण, आदि मे लघु राखी (। - -) तँ सगण और अंत मे लघु राखी (- - ।) तँ तगण हैत। येह आठ गण वृत्त मे चलैछ।

संक्षेप मे एकरा स्मरण रखबाक युक्ति निम्नलिखित दोहा मे देल जाइछ—

'यरत' 'भजस' लघु गुरु नियम
आदि मध्य अवसान
मगन नगन गुरु लघु नियम,
गणक भेद परमान

अर्थात् यगण क आदि, रगणक मध्य तगणक अन्त मे लघु रहैछ तथा भगणक आदि, जगणक मध्य ओ सगणक अन्त मे गुरु मात्रा रहैछ। मगण सबटा गुरु ओ नगणमे सबटा लघु रहैछ। तें ई दोहा अर्थ सहित स्मरण राखक चाही।

किछु छन्दक भेद

मात्रावृत्त

चौपाइ

धर धर कहथि निकट नहि जाथि।
हाथी कुकुर रीति डराथि॥
पीटथि छाती बनिता कानि।
कपि उत्पात भेल सब हानि॥

पहिनहि कहल गेल अछि जे एहि मे प्रत्येक चरण १६ मात्राक होइछ। वर्णक नियम नहि अछि।

दोहा

बुद्धि विहीन कुमंत्रणा, कुंभकर्ण सुनि कान
कहल दशानन सों उचित, नय कोबिद निज ज्ञान

एकरा प्रथम तथा तेसर चरण मे १३-१३ एवं दोसर ओ चारिम चरण मे ११-११ मात्रा होइछ।

सोरठा

दोहाक उनटा होइछ—यथा—
कहल राम सँ फेरि, सूर्पनखा रावण बहिन
वंचक करह अंधेरि, हम कि अवज्ञा योग्य जन?

बरवा

कुबजा हरलक मतिआ, चानन लगाए
प्रियतम भेल कपटिआ, मधुपुर जाए

एहि मे १२ मात्राक विश्राम पर प्रति पांती मे सात और मात्रा रहै छैक।

रोला छन्द

तनिक करब हम रुधिर पान कट कट कय खायब
नहि तँ छाड़ब प्राण हठहि यमपुर चलि जायब
सीता काँ लए आनि दशानन कें हम देबनि
होएता भाय प्रसन्न बहुत धन सम्पति लेबनि

एकर प्रत्येक चरण २४ मात्राक होइछ।

तोमर छन्द

डोलैछ जखन समीर। जनु उरग सांस अधीर
नहि शीत किछुओ आय। तनकें रहय मुरझाय

एहि मे प्रत्येक चरण मे बारह मात्रा होइछ किन्तु अंत मे एक लघु तथा एक गुरु देब आवश्यक होइछ।

पद्धरि वा बसंत

राधा पद पंकज नखमयंक, प्रतिबिम्बित जनिकर अलक अंक
से विघ्न हरथु हरि एक बेरि, हमरहु दिशि करुणा कटाक्ष फेरि

एकरा प्रत्येक चरण मे १६ मात्रा होइछ। ई एक प्रकारक चौपाइ थीक।

कुंडलिया छंद

दोहा ओ रोला मिलि कै ई छन्द बनैछ—

रहइत अछि दोहा तखन, चारि चरण रोलाक
कुंडलिया होइछ रुचिर, छन्द सरस कविताक
छन्द सरस कविताक ह्वैछ षट-पद अति सुन्दर
कुंडलियाक प्रचार देश मे बढ़ल घरहि घर
एहि छन्द कें परम कर्ण प्रिय नीक सबहिं कह
आदि अंत पद सदा सुकवि गण एक रंग कह

हरिगीतिका

एकरा प्रत्येक चरण मे २८-२८ मात्रा रहै छैक तथा १६ मात्रा पर यति रहै छैक।

जय भक्ति भावन विश्व पावन रामचन्द्र दयानिधे
धृत चाप शायक सर्व नायक जानकीश विधेर्विधे
जय पंच भूत विभूति कारण सर्व चारण सद्गते
त्वयि सन्तु मन्नतयोऽथ मामिह पाहि पाहि जगत्पते

आनो कतेक छन्दक प्रचार अछि मुदा विस्तार भय सँ से सब नहि दै आब किछु वर्णवृत्ताक उदाहरण दै छी।



वर्णवृत्त

शिखरिणी छन्द

अरे बाबा दावानल सदृश लंका जरैए
अधर्मी लंकेशो तनिक सब पापे करैए
पड़ा रे रे बाबू किछु न मन काबू परैए
बिना पानी लंका नृपति पटरानी मरैए

एकरा प्रत्येक चरण मे यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा लघु ओ एक गुरु होइछ।

मालिनी छन्द

सरस ऋतु वसंते श्रीक बाहुल्य देखू
जग चर अचरो मे मोद माधुर्य पेखू
वन कुसुम लता ई भावसँ भव्य वाला
नव वरख गरा मे मालिनी देति माला

एकरा प्रत्येक चरणमे दू नगण एक मगण और दू यगण रहैछैक।

भुजंग प्रयात

चिन्हारे अहाँ छी विरंची प्रपौत्रे।
कुकर्मी अहाँ छी करै छी कि सौत्रें।
गिरीशाच्चंना छोड़ि ई की करैछी।
पर स्त्री अहाँ छद्म सों की हरै छी।

एकरा प्रत्येक चरणमे चारि चारि यगण रहैछ।

शार्दूल बिक्रीड़ित

लंका मे कपि एक आयल बली निशशंकता की कहू
की ओ केरि अनर्थ जारत पुरी से वृत्त बूझू अहूँ

एकर प्रत्येक चरण म, स, ज, त, त, एवं एक गुरुक बनैछ।

मंदाक्रान्ता

की हौ की हौ कहह झट दै मूँह कीयै सुखेलौ
बीरे बीरे बहुत जन छी त्रास की हेतु भेलौ
हँ हौ, हँ हौ विपति बड़ छौ काल लंका समैलौ
लंका ध्वंसी कपिक सदृशे दोसरो फेरि ऐलौ

एकर प्रत्येक चरण म, भ, न, त, त, म तथा दूगुरु सँ बनैछ।

एहिना और अनेक वर्णवृत अछि। विस्तार भय सँ से सब नहि दै सकै छी। मुदा मात्रा वृतक अपेक्षा वर्णवृत्त बनैबा मे अधिक कठिनता एवं कुशलता छैक। आइ काल्हुक पद्यमे बहुधा वर्ण मात्रा वा छन्दादि भेदक विशेष ध्यान नहि राखल जाइछ।

—इति—

प्रकाशक
अभिनव ग्रन्थागार,
पटना

सोल एजेन्ट्स तथा स्टाकिस्टस
पेपर हाउस,
लहेरियासराय (दरभंगा)

मुद्रक—श्री सूर्यनारायण झा,
अभिनव विद्यापति प्रेस,
लहेरियासराय